Mansi

02 Oct 2001

08:32 PM

Mumbai

Model: Navgrah-Report

Order No: 121919901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं उनके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है, जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रपक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जब तक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कंप्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित हैं। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पाराशर होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम्, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का केवल संकेत प्राप्त कर सकते हैं। भविष्य में क्या घटित होगा, इसकी पूर्ण भविष्यवाणी केवल सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही कर सकते हैं।

यह जन्मपत्रिका जातक द्वारा उपलब्ध कराई गई जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरणों पर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश केवल संकेत मात्र हैं, जिन पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए। फलादेश को बिना सोचे-समझे हूबहू अपने जीवन में लागू करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गई सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं हैं। जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं हैं।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**02/10/2001**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**20:32:00 घंटे**
इष्ट	35:05:51 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:57:29 उत्तर
रेखांश	72:49:55 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	19:53:19 घंटे
वेलान्तर	00:10:37 घंटे
साम्पातिक काल	20:38:55 घंटे
सूर्योदय	06:29:39 घंटे
सूर्यास्त	18:26:10 घंटे
दिनमान	11:56:31 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	15:36:23 कन्या
लग्न के अंश	24:26:45 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मेष - मंगल
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उ.भाद्रपद - 4**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	ध्रुव
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युंजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ञ-&
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1923	आश्विन	10
Kannada	संवत : 2058	आश्विन	17
बंगाली	सन : 1408	आश्विन	16
Malayalam	संवत : 2058	पुरुटासी	16
केरल	कोल्लम : 1177	कन्नि	16
Gujarati	संवत : 2058	आश्विन	17
चैत्रादि	संवत : 2058	आश्विन	शुक्ल 15
कार्तिकादि	संवत : 2058	आश्विन	शुक्ल 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 15
तिथि समाप्ति काल _____: 19:18:48
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: उ.भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:30:11 घंटे
जन्म योग _____: उ.भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____: वृद्धि
योग समाप्ति काल _____: 11:11:02 घंटे
जन्म योग _____: ध्रुव
सूर्योदय कालीन करण _____: बव
करण समाप्ति काल _____: 19:18:48 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 63:39:25
भभोग _____: 66:04:53
भोग्य दशा काल _____: शनि 0 वर्ष 8 मा 12 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

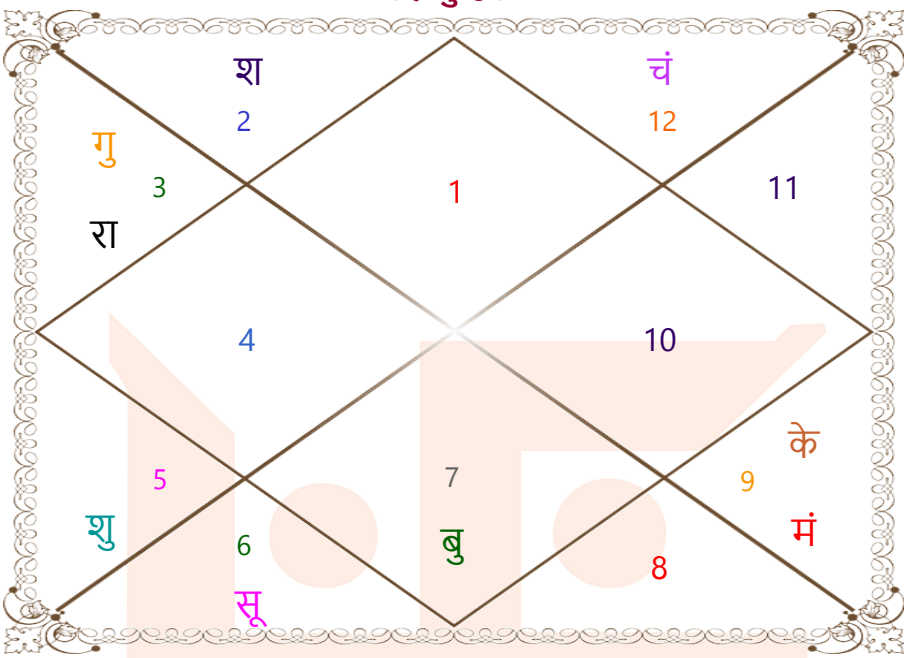

चन्द्र कुंडली

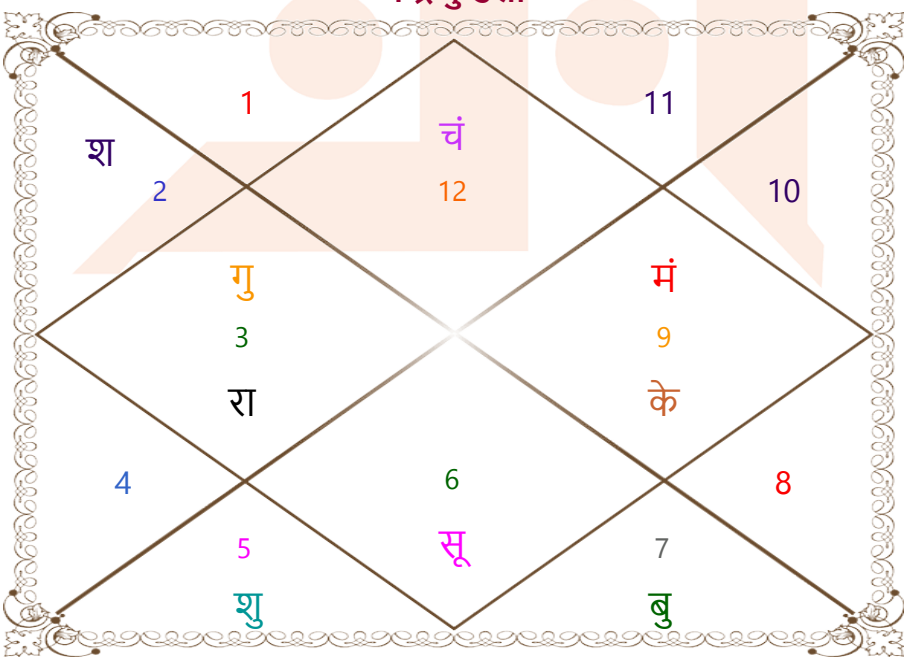

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

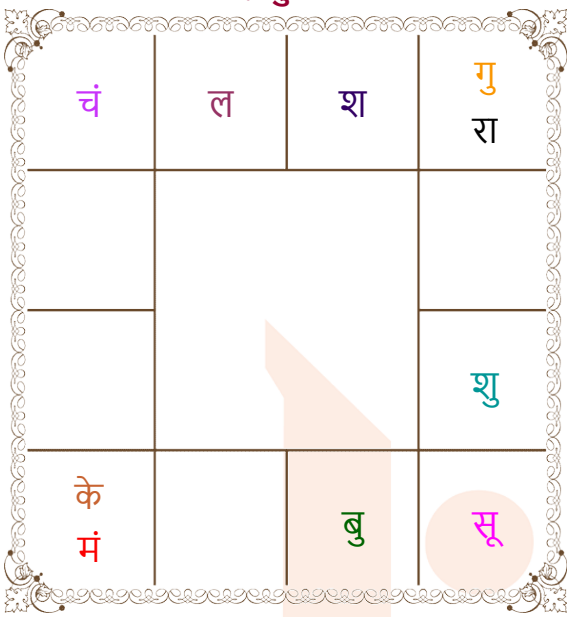

लग्न कुंडली

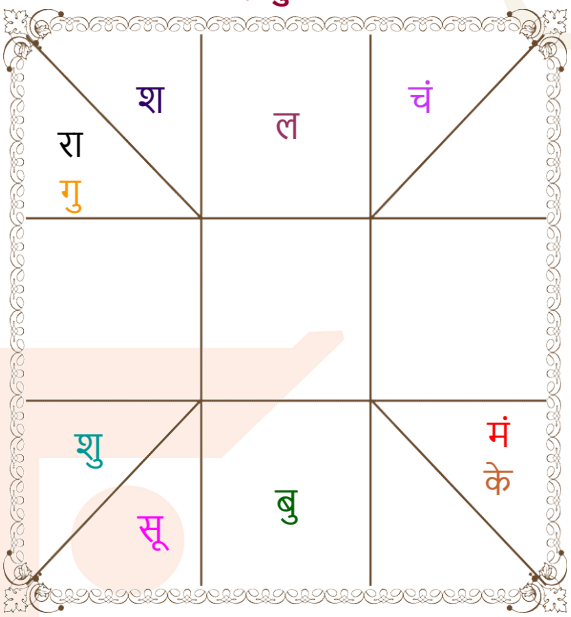

विंशोत्तरी
शनि 0वर्ष 8मा 12दि
शनि

02/10/2001

17/06/2103

शनि	15/06/2002
बुध	16/06/2019
केतु	15/06/2026
शुक्र	15/06/2046
सूर्य	15/06/2052
चन्द्र	15/06/2062
मंगल	15/06/2069
राहु	16/06/2087
गुरु	17/06/2103

योगिनी
भद्रिका 0वर्ष 2मा 6दि
धान्या

09/12/2025

08/12/2028

धान्या	10/03/2026
भ्रामरी	10/07/2026
भद्रिका	09/12/2026
उल्का	10/06/2027
सिद्धा	09/01/2028
संकटा	08/09/2028
मंगला	09/10/2028
पिंगला	08/12/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं-	स्थिति
लग्न			मेष	24:26:45	400:05:27	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	---
सूर्य			कन्या	15:36:23	00:59:01	हस्त	2	13	बुध	चन्द्र	गुरु	सम राशि
चन्द्र			मीन	16:10:29	12:10:13	उ.भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	सम राशि
मंगल			धनु	19:42:31	00:37:06	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	मित्र राशि
बुध	व		तुला	05:46:13	00:05:48	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चन्द्र	मित्र राशि
गुरु			मिथु	20:16:52	00:05:44	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	20:14:38	01:13:45	पू.फ़ाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
शनि	व		वृष	21:03:50	00:00:37	रोहिणी	4	4	शुक्र	चन्द्र	शुक्र	मित्र राशि
राहु	व		मिथु	06:59:23	00:13:38	आद्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	उच्च राशि
केतु	व		धनु	06:59:23	00:13:38	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	उच्च राशि
हर्ष	व		मक	27:21:30	00:01:20	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
नेप	व		मक	12:10:53	00:00:30	श्रवण	1	22	शनि	चन्द्र	राहु	---
प्लूटो			वृश्चि	19:05:45	00:01:16	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	केतु	---
दशम भाव			मक	13:26:42	--	श्रवण	--	22	शनि	चन्द्र	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : 23:52:36

लग्न-चलित

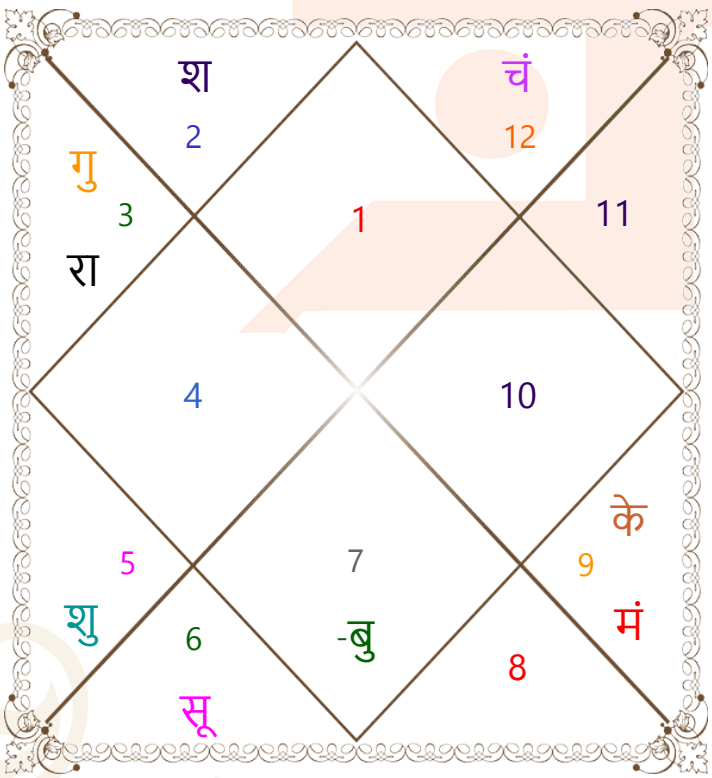

चन्द्र कुंडली

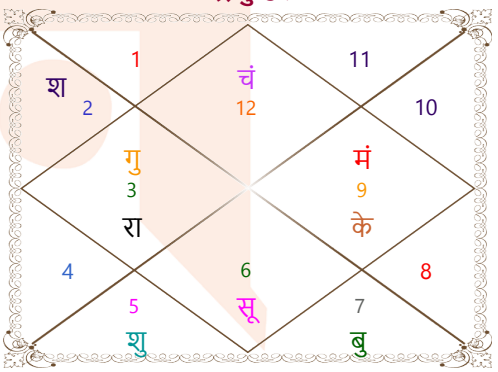

नवमांश कुंडली

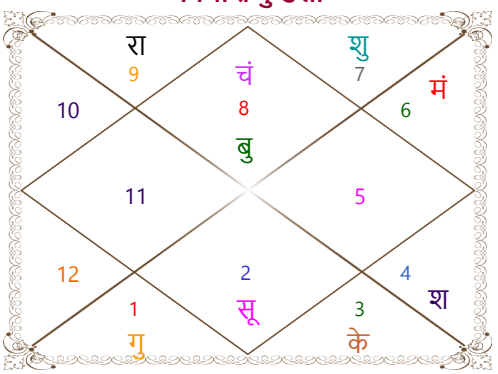

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	07:36:44	मेष	24:26:45
2	वृष	07:36:44	वृष	20:46:44
3	मिथुन	03:56:43	मिथुन	17:06:43
4	कर्क	00:16:42	कर्क	13:26:42
5	सिंह	00:16:42	सिंह	17:06:43
6	कन्या	03:56:43	कन्या	20:46:44
7	तुला	07:36:44	तुला	24:26:45
8	वृश्चिक	07:36:44	वृश्चिक	20:46:44
9	धनु	03:56:43	धनु	17:06:43
10	मकर	00:16:42	मकर	13:26:42
11	कुम्भ	00:16:42	कुम्भ	17:06:43
12	मीन	03:56:43	मीन	20:46:44

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	24:26:45
2	वृष	22:32:25
3	मिथुन	17:37:58
4	कर्क	13:26:42
5	सिंह	13:05:27
6	कन्या	17:51:35
7	तुला	24:26:45
8	वृश्चिक	22:32:25
9	धनु	17:37:58
10	मकर	13:26:42
11	कुम्भ	13:05:27
12	मीन	17:51:35

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आद्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फ़ाल्गुनी	उ.फ़ाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद

चलित कुंडली

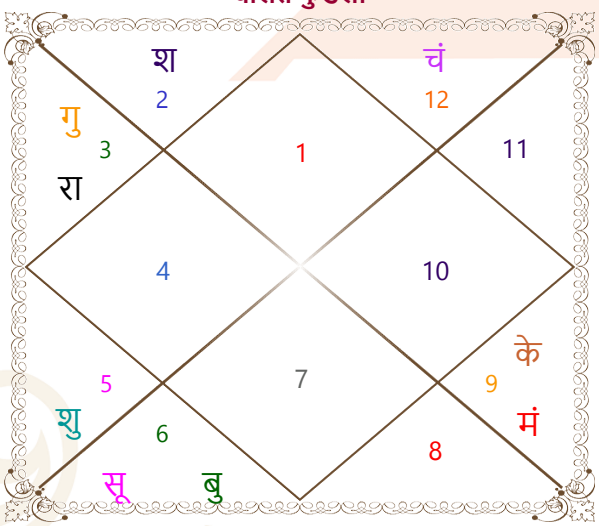

भाव कुंडली

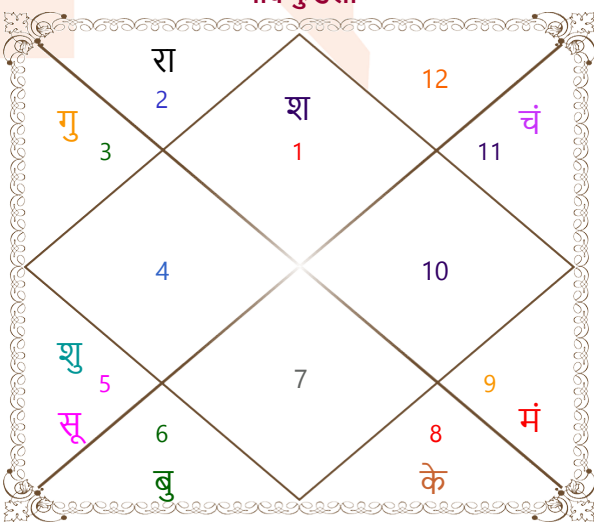

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	युवा	शक्त	सभा	1.63	27 %
चन्द्र	पुत्र	मातृ	युवा	शान्त	नृत्यलिप्सा	7.99	50 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	वृद्ध	मुदित	उपवेशन	3.94	71 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	मुदित	आगमन	5.90	41 %
गुरु	अमात्य	धन	वृद्ध	खल	सभा	2.57	70 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	वृद्ध	खल	आगम	1.63	54 %
शनि	आत्मा	आयु	कुमार	मुदित	आगमन	1.15	57 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	दीप्त	उपवेशन	0.00	76 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	दीप्त	कौतुक	0.00	76 %
कुल						**24.81**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आद्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फ़ाल्गुनी	उ.फ़ाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद

चलित कुंडली

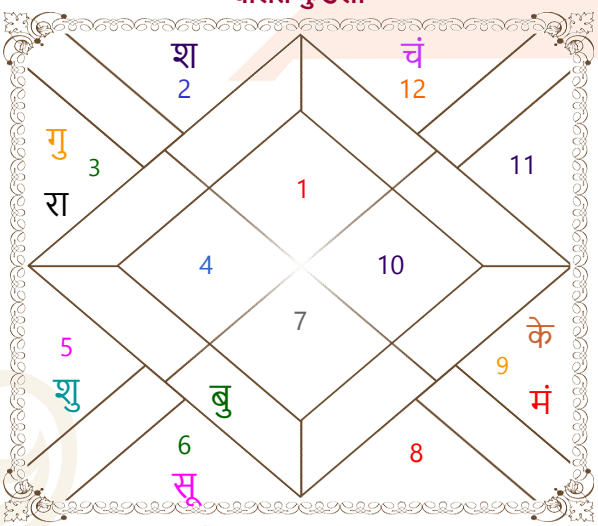

लग्न-चलित

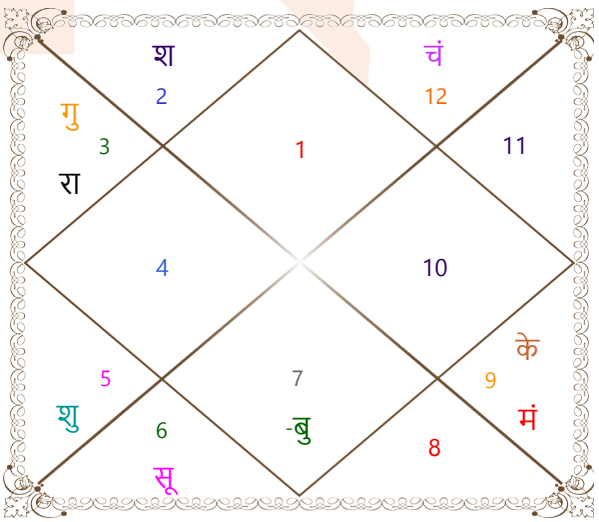

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 0 वर्ष 8 मास 12 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
02/10/2001		15/06/2002		16/06/2019		15/06/2026		15/06/2046	
15/06/2002		16/06/2019		15/06/2026		15/06/2046		15/06/2052	
	00/00/0000	बुध	11/11/2004	केतु	12/11/2019	शुक्र	15/10/2029	सूर्य	03/10/2046
	00/00/0000	केतु	08/11/2005	शुक्र	11/01/2021	सूर्य	15/10/2030	चन्द्र	04/04/2047
	00/00/0000	शुक्र	08/09/2008	सूर्य	19/05/2021	चन्द्र	15/06/2032	मंगल	09/08/2047
	00/00/0000	सूर्य	16/07/2009	चन्द्र	18/12/2021	मंगल	15/08/2033	राहु	03/07/2048
	00/00/0000	चन्द्र	15/12/2010	मंगल	16/05/2022	राहु	15/08/2036	गुरु	21/04/2049
	00/00/0000	मंगल	12/12/2011	राहु	03/06/2023	गुरु	16/04/2039	शनि	03/04/2050
	00/00/0000	राहु	01/07/2014	गुरु	09/05/2024	शनि	15/06/2042	बुध	08/02/2051
	02/10/2001	गुरु	06/10/2016	शनि	18/06/2025	बुध	15/04/2045	केतु	16/06/2051
गुरु	15/06/2002	शनि	16/06/2019	बुध	15/06/2026	केतु	15/06/2046	शुक्र	15/06/2052

चन्द्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
15/06/2052		15/06/2062		15/06/2069		16/06/2087		17/06/2103	
15/06/2062		15/06/2069		16/06/2087		17/06/2103		03/10/2121	
चन्द्र	15/04/2053	मंगल	12/11/2062	राहु	26/02/2072	गुरु	03/08/2089	शनि	19/06/2106
मंगल	14/11/2053	राहु	30/11/2063	गुरु	22/07/2074	शनि	14/02/2092	बुध	27/02/2109
राहु	16/05/2055	गुरु	05/11/2064	शनि	28/05/2077	बुध	22/05/2094	केतु	07/04/2110
गुरु	14/09/2056	शनि	15/12/2065	बुध	15/12/2079	केतु	28/04/2095	शुक्र	07/06/2113
शनि	16/04/2058	बुध	12/12/2066	केतु	02/01/2081	शुक्र	27/12/2097	सूर्य	20/05/2114
बुध	15/09/2059	केतु	10/05/2067	शुक्र	03/01/2084	सूर्य	15/10/2098	चन्द्र	19/12/2115
केतु	15/04/2060	शुक्र	09/07/2068	सूर्य	26/11/2084	चन्द्र	14/02/2100	मंगल	27/01/2117
शुक्र	15/12/2061	सूर्य	14/11/2068	चन्द्र	28/05/2086	मंगल	21/01/2101	राहु	04/12/2119
सूर्य	15/06/2062	चन्द्र	15/06/2069	मंगल	16/06/2087	राहु	17/06/2103	गुरु	03/10/2121

- उपरोक्त दशा चन्द्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 0 वर्ष 8 मा 11 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चन्द्र		शुक्र - मंगल	
18/06/2025		15/06/2026		15/10/2029		15/10/2030		15/06/2032	
15/06/2026		15/10/2029		15/10/2030		15/06/2032		15/08/2033	
बुध	08/08/2025	शुक्र	04/01/2027	सूर्य	02/11/2029	चन्द्र	05/12/2030	मंगल	10/07/2032
केतु	30/08/2025	सूर्य	06/03/2027	चन्द्र	03/12/2029	मंगल	09/01/2031	राहु	12/09/2032
शुक्र	29/10/2025	चन्द्र	16/06/2027	मंगल	24/12/2029	राहु	11/04/2031	गुरु	07/11/2032
सूर्य	16/11/2025	मंगल	26/08/2027	राहु	17/02/2030	गुरु	01/07/2031	शनि	14/01/2033
चन्द्र	16/12/2025	राहु	24/02/2028	गुरु	06/04/2030	शनि	05/10/2031	बुध	15/03/2033
मंगल	06/01/2026	गुरु	05/08/2028	शनि	03/06/2030	बुध	30/12/2031	केतु	09/04/2033
राहु	02/03/2026	शनि	13/02/2029	बुध	25/07/2030	केतु	04/02/2032	शुक्र	19/06/2033
गुरु	19/04/2026	बुध	05/08/2029	केतु	15/08/2030	शुक्र	15/05/2032	सूर्य	11/07/2033
शनि	15/06/2026	केतु	15/10/2029	शुक्र	15/10/2030	सूर्य	15/06/2032	चन्द्र	15/08/2033

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
15/08/2033		15/08/2036		16/04/2039		15/06/2042		15/04/2045	
15/08/2036		16/04/2039		15/06/2042		15/04/2045		15/06/2046	
राहु	26/01/2034	गुरु	23/12/2036	शनि	16/10/2039	बुध	09/11/2042	केतु	10/05/2045
गुरु	21/06/2034	शनि	26/05/2037	बुध	28/03/2040	केतु	08/01/2043	शुक्र	20/07/2045
शनि	12/12/2034	बुध	11/10/2037	केतु	03/06/2040	शुक्र	30/06/2043	सूर्य	10/08/2045
बुध	16/05/2035	केतु	07/12/2037	शुक्र	13/12/2040	सूर्य	21/08/2043	चन्द्र	15/09/2045
केतु	19/07/2035	शुक्र	18/05/2038	सूर्य	09/02/2041	चन्द्र	15/11/2043	मंगल	10/10/2045
शुक्र	18/01/2036	सूर्य	06/07/2038	चन्द्र	16/05/2041	मंगल	14/01/2044	राहु	13/12/2045
सूर्य	13/03/2036	चन्द्र	25/09/2038	मंगल	23/07/2041	राहु	17/06/2044	गुरु	08/02/2046
चन्द्र	12/06/2036	मंगल	21/11/2038	राहु	12/01/2042	गुरु	02/11/2044	शनि	16/04/2046
मंगल	15/08/2036	राहु	16/04/2039	गुरु	15/06/2042	शनि	15/04/2045	बुध	15/06/2046

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चन्द्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
15/06/2046		03/10/2046		04/04/2047		09/08/2047		03/07/2048	
03/10/2046		04/04/2047		09/08/2047		03/07/2048		21/04/2049	
सूर्य	21/06/2046	चन्द्र	18/10/2046	मंगल	11/04/2047	राहु	28/09/2047	गुरु	11/08/2048
चन्द्र	30/06/2046	मंगल	29/10/2046	राहु	30/04/2047	गुरु	11/11/2047	शनि	26/09/2048
मंगल	06/07/2046	राहु	25/11/2046	गुरु	17/05/2047	शनि	02/01/2048	बुध	07/11/2048
राहु	23/07/2046	गुरु	20/12/2046	शनि	07/06/2047	बुध	17/02/2048	केतु	24/11/2048
गुरु	06/08/2046	शनि	17/01/2047	बुध	25/06/2047	केतु	07/03/2048	शुक्र	12/01/2049
शनि	24/08/2046	बुध	12/02/2047	केतु	02/07/2047	शुक्र	01/05/2048	सूर्य	26/01/2049
बुध	08/09/2046	केतु	23/02/2047	शुक्र	23/07/2047	सूर्य	18/05/2048	चन्द्र	19/02/2049
केतु	15/09/2046	शुक्र	25/03/2047	सूर्य	30/07/2047	चन्द्र	14/06/2048	मंगल	09/03/2049
शुक्र	03/10/2046	सूर्य	04/04/2047	चन्द्र	09/08/2047	मंगल	03/07/2048	राहु	21/04/2049

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चन्द्र - चन्द्र	
21/04/2049		03/04/2050		08/02/2051		16/06/2051		15/06/2052	
03/04/2050		08/02/2051		16/06/2051		15/06/2052		15/04/2053	
शनि	15/06/2049	बुध	17/05/2050	केतु	15/02/2051	शुक्र	16/08/2051	चन्द्र	10/07/2052
बुध	03/08/2049	केतु	04/06/2050	शुक्र	09/03/2051	सूर्य	03/09/2051	मंगल	28/07/2052
केतु	24/08/2049	शुक्र	26/07/2050	सूर्य	15/03/2051	चन्द्र	03/10/2051	राहु	12/09/2052
शुक्र	21/10/2049	सूर्य	11/08/2050	चन्द्र	26/03/2051	मंगल	25/10/2051	गुरु	22/10/2052
सूर्य	07/11/2049	चन्द्र	06/09/2050	मंगल	02/04/2051	राहु	18/12/2051	शनि	09/12/2052
चन्द्र	06/12/2049	मंगल	24/09/2050	राहु	21/04/2051	गुरु	05/02/2052	बुध	22/01/2053
मंगल	26/12/2049	राहु	09/11/2050	गुरु	08/05/2051	शनि	03/04/2052	केतु	08/02/2053
राहु	16/02/2050	गुरु	21/12/2050	शनि	29/05/2051	बुध	25/05/2052	शुक्र	31/03/2053
गुरु	03/04/2050	शनि	08/02/2051	बुध	16/06/2051	केतु	15/06/2052	सूर्य	15/04/2053

चन्द्र - मंगल		चन्द्र - राहु		चन्द्र - गुरु		चन्द्र - शनि		चन्द्र - बुध	
15/04/2053		14/11/2053		16/05/2055		14/09/2056		16/04/2058	
14/11/2053		16/05/2055		14/09/2056		16/04/2058		15/09/2059	
मंगल	28/04/2053	राहु	05/02/2054	गुरु	20/07/2055	शनि	15/12/2056	बुध	28/06/2058
राहु	30/05/2053	गुरु	19/04/2054	शनि	05/10/2055	बुध	07/03/2057	केतु	28/07/2058
गुरु	27/06/2053	शनि	14/07/2054	बुध	13/12/2055	केतु	09/04/2057	शुक्र	22/10/2058
शनि	31/07/2053	बुध	30/09/2054	केतु	11/01/2056	शुक्र	15/07/2057	सूर्य	17/11/2058
बुध	30/08/2053	केतु	01/11/2054	शुक्र	01/04/2056	सूर्य	13/08/2057	चन्द्र	30/12/2058
केतु	11/09/2053	शुक्र	31/01/2055	सूर्य	25/04/2056	चन्द्र	30/09/2057	मंगल	29/01/2059
शुक्र	17/10/2053	सूर्य	28/02/2055	चन्द्र	05/06/2056	मंगल	03/11/2057	राहु	17/04/2059
सूर्य	28/10/2053	चन्द्र	14/04/2055	मंगल	03/07/2056	राहु	28/01/2058	गुरु	25/06/2059
चन्द्र	14/11/2053	मंगल	16/05/2055	राहु	14/09/2056	गुरु	16/04/2058	शनि	15/09/2059

चन्द्र - केतु		चन्द्र - शुक्र		चन्द्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
15/09/2059		15/04/2060		15/12/2061		15/06/2062		12/11/2062	
15/04/2060		15/12/2061		15/06/2062		12/11/2062		30/11/2063	
केतु	27/09/2059	शुक्र	25/07/2060	सूर्य	24/12/2061	मंगल	24/06/2062	राहु	08/01/2063
शुक्र	02/11/2059	सूर्य	25/08/2060	चन्द्र	08/01/2062	राहु	16/07/2062	गुरु	28/02/2063
सूर्य	13/11/2059	चन्द्र	15/10/2060	मंगल	19/01/2062	गुरु	05/08/2062	शनि	30/04/2063
चन्द्र	30/11/2059	मंगल	19/11/2060	राहु	15/02/2062	शनि	29/08/2062	बुध	23/06/2063
मंगल	13/12/2059	राहु	18/02/2061	गुरु	12/03/2062	बुध	19/09/2062	केतु	16/07/2063
राहु	14/01/2060	गुरु	11/05/2061	शनि	09/04/2062	केतु	28/09/2062	शुक्र	18/09/2063
गुरु	11/02/2060	शनि	15/08/2061	बुध	05/05/2062	शुक्र	23/10/2062	सूर्य	07/10/2063
शनि	16/03/2060	बुध	09/11/2061	केतु	16/05/2062	सूर्य	30/10/2062	चन्द्र	08/11/2063
बुध	15/04/2060	केतु	15/12/2061	शुक्र	15/06/2062	चन्द्र	12/11/2062	मंगल	30/11/2063

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 7, 8, 6
शत्रु अंक	4, 5,
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

कालसर्प योग

अग्रे राहुः अधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय॥

आगे राहु हो एवं पीछे केतु, इनके मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हों तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार कालसर्प योग मुख्यतः बारह प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1- अनंत, 2- कुलिक, 3- वासुकि, 4- शंखपाल, 5- पद्म, 6- महापद्म, 7- तक्षक, 8- कर्कोटक, 9- शंखचूड़, 10- घातक, 11- विषधर, 12- शेषनाग।

यह योग 'उदित-अनुदित' भेद से दो प्रकार के होते हैं। राहु के मुख की ओर सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो 'उदित गोलार्द्ध' नामक योग बनता है, एवं राहु के पीछे की ओर यदि सभी ग्रह हों तो 'अनुदित गोलार्द्ध' नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धन प्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह का सामना करना पड़ता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है और कार्य अक्सर विलंब से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात-पित्त आदि त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण ही उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीड़ा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते, वे प्रायः कालसर्प योग के कारण होते हैं। इन कष्टों से राहत पाने के लिए कालसर्प योग के उपाय करना आवश्यक हो जाता है।

जातक पर कालसर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है और आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम्॥

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चंद्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दांपत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए, मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुंडली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दांपत्य जीवन प्रारंभ करना चाहिए, जिससे जीवन में शांति तथा संपन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधित्व करता है, अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य की तुलना में कर्म पर अधिक ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय संभव नहीं है, अतः इस सिद्धांत का पालन करते हुए आप जीवन में अपने परिश्रम से उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी रुचि सीमित रहेगी और आप धार्मिक अनुष्ठानों या तीर्थ यात्राओं में कम ही भाग लेंगी। आयु बढ़ने के साथ आप जीवन में धर्म एवं भाग्य के महत्व को स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशेष सम्मान मिलने की प्रबल संभावना रहेगी। आप अत्यंत उत्साह और पराक्रम के साथ अपने कार्यों को पूर्ण करने में सदैव तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा, जो शुभ और अशुभ दोनों कार्यों पर हो सकता है। आप भूमि-संपत्ति आदि पर निवेश करना पसंद करेंगी और इससे आपको भविष्य में अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। हालांकि जीवन में कुछ बाधाएं आ सकती हैं, लेकिन आप उनका समाधान करने में सक्षम रहेंगी। आप अपने दांपत्य जीवन का सुखपूर्वक आनंद लेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके साहस में वृद्धि होगी और समाज में आपके प्रभाव को स्वीकार किया जाएगा, जिससे आपको मान-सम्मान मिलेगा। आपको भाई-बहनों का भी समय-समय पर सहयोग प्राप्त होता रहेगा। चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से आप भूमि, वाहन और सुख-सुविधाओं से संपन्न रहेंगी, हालांकि माता के स्वास्थ्य को लेकर स्थिति मध्यम रह सकती है।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप अपने परिश्रम और साहस से कर्म को प्रधानता देते हुए स्वयं अपना भाग्योदय करेंगी। इससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा और दांपत्य जीवन में भी मधुरता बनी रहेगी। आप अपने परिजनों को समस्त सुख-सुविधाएं प्रदान करने में सफल रहेंगी।

साढ़ेसाती विचार

चन्द्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चन्द्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र :

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030

द्वितीय चक्र :

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------

तृतीय चक्र :

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कम्बल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हौं जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	81%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	73%	भाग्योदय, पराक्रम
नीलम	शनि	67%	धन, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
पुखराज	गुरु	66%	पराक्रम, भाग्योदय, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	62%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	59%	पराक्रम, दम्पति
हीरा	शुक्र	55%	सन्तति सुख, धन, दम्पति
मोती	चन्द्र	50%	कम खर्च, सुख
पन्ना	बुध	28%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग

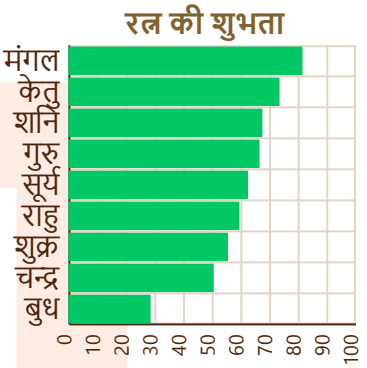

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	15/06/2002	50%	25%	69%	41%	66%	61%	80%	66%	61%
बुध	16/06/2019	69%	25%	81%	52%	66%	61%	67%	59%	73%
केतु	15/06/2026	50%	25%	88%	28%	66%	61%	55%	44%	86%
शुक्र	15/06/2046	50%	25%	81%	41%	66%	67%	73%	66%	80%
सूर्य	15/06/2052	75%	56%	88%	28%	72%	34%	55%	44%	61%
चन्द्र	15/06/2062	69%	62%	81%	41%	66%	55%	67%	44%	61%
मंगल	15/06/2069	69%	56%	94%	3%	72%	55%	67%	44%	80%
राहु	16/06/2087	50%	25%	69%	28%	66%	61%	73%	72%	61%
गुरु	17/06/2103	69%	56%	88%	3%	78%	34%	67%	59%	73%

विस्तृत रत्न विचार

ओषधिमणिमन्त्राणां ग्रह-नक्षत्रतारकाः।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत्॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह-नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही हो, तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह जातक की कुंडली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो, उसका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य हैं।

रत्न जितना स्वच्छ और सही कटाव का होगा, उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्ण फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन, शरीर के वजन और ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है, तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न का शरीर से स्पर्श होना अति आवश्यक है। अंगुली में और विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना पड़े, तो रत्न के वार के दिन ही उसे उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए, तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष समाप्त हो गया है। यदि रत्न का रंग फीका पड़ जाए, तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हो गया है। यदि रत्न में दरार पड़ जाए, तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है; तब ग्रह की शांति कराएं तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः धारण करें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हों, उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि जातक किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है, तो वह इन रत्नों के स्थान पर रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रहों की शुभता प्राप्त कर सकता है, अन्यथा मंत्र जाप करें। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ाया जा सकता है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश 'जीवन रत्न' होता है और इसे धारण करने से जातक को स्वास्थ्य लाभ, व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न 'भाग्य रत्न' कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोत्तरी होती है और यह मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न 'कारक रत्न' कहलाता है। इसके धारण करने से कार्यों में प्रगति, धन लाभ व चहुंमुखी विकास प्राप्त होता है। जातक को कौन सा रत्न पहनना चाहिए और कौन सा नहीं, इसकी विस्तृत जानकारी नीचे दी जा रही है।

शुभ रत्न, धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारंभ करने से उसमें इच्छित सफलता प्राप्त होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप करने से मानसिक शांति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ जैसे अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से जातक को वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभ ज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुण्डली और रत्न

आपके लिए मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

मूंगा आपका जीवन रत्न है। इसे धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, आपके आत्मविश्वास और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा और आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख-संपत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों का जो श्रेय नहीं मिल पाता था, वह अब प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने के कुछ ही समय बाद आपको सुख की अनुभूति होगी। अतः आप इस रत्न को बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें, तो लाभ होगा।

आपके लिए लहसुनिया, नीलम, पुखराज, माणिक्य, गोमेद, हीरा एवं मोती शुभ रत्न हैं, लेकिन ये दशानुसार शुभ या अशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः यदि आप इन्हें स्व-दशा या मित्र दशा में धारण करेंगे, तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इन्हें धारण न करना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपचार हेतु रुद्राक्ष धारण करना अथवा दान एवं मंत्र जाप करना श्रेष्ठ रहेगा।

पन्ना रत्न आपके लिए अशुभ है, अतः इसे न पहनना ही बेहतर होगा। इसे धारण करने से आपको मानसिक तनाव और स्वास्थ्य हानि हो सकती है। यदि आप इसे धारण करना चाहते हैं, तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें। विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता की जाँच करते रहें, क्योंकि यह रत्न किसी विशेष दशा या गोचर में आपके लिए कष्टकारी भी हो सकता है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न की शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न की शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण करने से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला

ग्रह है। यद्यपि अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परंतु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम भाव के दोष से मुक्त है। मंगल का रत्न मूंगा शुभ होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्टमेश भी है, इसलिए मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते हैं। इसे पहनने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चय और साहस में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए 'जीवन रत्न' भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगुली में चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातःकाल स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने इष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप-दीप दिखाकर धारण करें। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र 'ॐ अं अंगारकाय नमः' का 1 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल ग्रह की वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम 6 रत्ती से लेकर अधिकतम 8 रत्ती तक धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इसके साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी के रूप में धारण न कर पाएं, तो इसे लॉकेट के रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न चांदी के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इसके उपरत्न लाल हकीक एवं 3 मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु नवम भाव में स्थित है। केतु का रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। यह रत्न धारण करने से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। रत्न की शुभता से आप उदार और दयालु बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपके भाग्य को प्रबल बना सकता है। इस रत्न को धारण कर आप नैतिकता के साथ धन कमाने का प्रयास करेंगे। रत्न का प्रभाव सहोदर (भाइयों) से आपके संबंधों को मजबूत करेगा। यह रत्न पिता के सुख में भी वृद्धि करेगा और इसके प्रभाव से विदेश यात्रा या विदेशी स्थानों से धन प्राप्ति के योग बनेंगे।

केतु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यंत प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न की शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी की धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगुली में धारण करें। रत्न धारण करने के पश्चात केतु रत्न मंत्र 'ॐ कें

केतवे नमः' का 1 माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु की वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल और धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी के रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंबवती तथा लाभवान बनाएगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह निरंतर बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख-संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति कराएगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता दिलाएगा। नीलम रत्न पैतृक संपत्ति में वृद्धि करेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। कर्मेश शनि का रत्न नीलम आपके कार्यक्षेत्र की समस्याओं का निवारण कर सकता है। यह रत्न आपकी योग्यता के अनुसार सफलता दिला सकता है। आत्मबल और मनोबल की वृद्धि कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम रत्न आपके कार्य क्षेत्र को अनुकूल कर आपको उन्नति और विकास के अवसर प्राप्त करने में सहयोग करेगा। शनि आयेश भी है इसलिए शनि रत्न नीलम धारण करने से आपकी आजीविका और आय दोनों क्षेत्रों से सुखद परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप आय और कार्यक्षेत्र को सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर संध्या काल में स्नानादि के बाद शुद्ध होकर, अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं पुष्प से पूजन करने के बाद मध्यमा अंगुली में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' का एक माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती या फिर 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा और पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि आप नीलम धारण न कर पाएं, तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं 7 मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न आपको अपने बड़े भाइयों से स्नेह दिलाएगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोग करेगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको स्वतंत्र व्यापार की ओर अग्रसर कर सकती

है। इससे भाग्य और आय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। पुखराज रत्न आपको सहोदर भाइयों का सुख प्रदान कराएगा। धन और सुख-सौभाग्य के लिए भी पुखराज एक शुभदायक रत्न है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते हैं। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे हैं, तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन तथा शयन सुख को बढ़ा सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन प्रातःकाल शुद्ध होने के बाद, धूप-दीप दिखाकर तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' का एक माला जाप 5 मुखी रुद्राक्ष की माला पर करना चाहिए। जाप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्य के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी और पीले वस्त्र। यह रत्न कम से कम 4 रत्ती से लेकर 8 रत्ती तक धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं, तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं 5 मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। आपको सूर्य का रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको पराक्रमी बनाएगा और आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में समर्थ होंगे। रत्न की शुभता से आपकी कठोरता में कमी होगी। आप भाग्यशाली बनेंगे। रत्न की शुभता से आपकी न्यायप्रियता बढ़ेगी। आपको सरकारी नौकरी में उच्चाधिकारियों की ओर से यथासंभव सहयोग प्राप्त होगा। ननिहाल पक्ष से संबंध मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको समाज में सम्मान दिलाएगा। रत्न की शुभता से आप तेजस्वी बनेंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में वृद्धि करने में सक्षम है। इसके अलावा, सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगुली में स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप-दीप दिखाकर इसे धारण करें। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र 'ॐ घृणि सूर्याय नमः' का कम से कम 1 माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत सूर्य से संबंधित वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना

चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम 4 रत्ती से लेकर 8 रत्ती तक धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अत्यंत आवश्यकता होने पर इन्हें आप लॉकेट के रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में असमर्थ हैं, तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु तीसरे भाव में स्थित है। आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। इस रत्न को धारण करने से यह आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। गोमेद रत्न सकारात्मक विचारधारा बनाये रखेगा। रत्न के प्रभाव से आप प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होंगी। पराक्रम व बल की बढ़ोतरी होगी। प्रवास के कार्यों में सफलता मिलेगी। मनोनुकूल पद की प्राप्ति होगी एवं उत्तरोत्तर उन्नति होगी। आप धर्म-कर्म की गतिविधियों में रुचि लेंगी। गोमेद रत्न आपके लिए शुभदायक है।

राहु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपनी पत्नी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुरभाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में स्वयं शुद्ध होकर, रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएं। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और पुष्प से पूजन कर मध्यमा अंगुली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र 'ॐ रां राहवे नमः' का 108 बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी के रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसका उपरत्न या 8 मुखी रुद्राक्ष धारण करना भी श्रेष्ठकर रहता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र का रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललित कलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। यह आपको कला और सौंदर्य से संपन्न तथा सद्गुणी

बनाएगा। आप आस्तिक और उदार महिला बनेंगी। हीरा रत्न के प्रभाव से आप विदुषी, प्रतिभाशाली और एक अच्छी वक्ता सिद्ध होंगी। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ, मंत्री या न्यायाधीश भी हो सकती हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख और उत्तम व विश्वसनीय मित्र प्रदान करेगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश का स्वामी है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बना सकते हैं। हीरा रत्न धारण करने से आपकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। व्यापारिक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। सप्तमेश का रत्न होने के कारण हीरा रत्न आपको कुटुंब से सुखी और विदेश स्थानों से लाभ दिला सकता है। शुक्र रत्न आपको पारिवारिक सुख के साथ धन संचय का सुख भी दे सकता है।

हीरा रत्न स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर शुक्रवार के दिन सूर्योदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर धारण करें। रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से बने पंचामृत में डुबोकर शुद्ध कर लें। फिर इसे अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं पुष्प दिखाकर अनामिका अंगुली में धारण करें। हीरा धारण करते समय शुक्र मंत्र 'ॐ शुं शुक्राय नमः' का 108 बार जाप करना चाहिए। मंत्र जाप के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक वजन का धारण करना चाहिए; यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी के रूप में रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न ओपल, जरकन, स्फटिक एवं 6 मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ फलदायक रहेगा। मोती रत्न की शुभता से आप अपने व्ययों पर नियंत्रण रख पाएंगे। भावनात्मक रूप से आप सुदृढ़ होंगे। मोती रत्न आपको विदेश यात्राओं में रुचि देगा। आपका कार्यक्षेत्र अस्पताल या धार्मिक संस्थान हो सकता है। रत्न के प्रभाव से आपको विदेश यात्राओं से उत्तम आय प्राप्त होगी। मोती रत्न की शुभता से आप चिंतनशील व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप सकारात्मक विचार वाले व्यक्ति बनेंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चन्द्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चन्द्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चन्द्र रत्न मोती की शुभता आपको सौम्य और सरल स्वभाव, स्वाभिमानी, आत्म-सम्मान तथा महत्वाकांक्षा का गुण दे सकती है। इसके अतिरिक्त मोती आपको धन, प्रतिष्ठा, यात्रा और ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन, कल्पना शक्ति और प्रगतिशील विचारधारा भी प्रदान कर रहा है। चतुर्थेश का रत्न होने के कारण चन्द्र रत्न मोती आपको माता का सुख, कर्तव्यनिष्ठा, वाहन और जमीन-जायदाद का सुख प्रदान कर सकता है। इसलिए चन्द्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर कनिष्ठिका अंगुली में सोमवार को प्रातःकाल धारण

करना शुभ है। प्रातःकाल की सभी क्रियाओं के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप और पुष्प से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र 'ॐ सों सोमाय नमः' का एक माला जाप रुद्राक्ष की माला पर करना चाहिए। तदोपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम 4 रत्ती से 10 रत्ती का धारण करना शुभ फलदायी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न को अंगूठी के अलावा लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे- सफेद मूनस्टोन, सफेद हकीक एवं 2 मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आप व्यर्थ के वाद-विवाद या लड़ाई-झगड़ों में पड़ सकते हैं। यह रत्न व्यावसायिक साझेदार पर आपका विश्वास कम कर सकता है। आपके व्यवहार में शिष्टता का अभाव आ सकता है। पन्ना रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक व्यावहारिक हो सकते हैं। जिसके कारण आपमें संवेदना, दया और सहानुभूति जैसे गुणों की कमी हो सकती है। लेखन, क्रय-विक्रय और व्यापारिक कुशलता प्राप्ति के लिए रत्न की अनुकूलता नहीं बनी हुई है। बुध रत्न पन्ना से आपकी पत्नी का स्वभाव अव्यावहारिक हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक पक्ष से भी कमजोर कर रहा है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं छठे भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं षष्ठेश बुध अपने शुभ फल प्रदान नहीं कर पाएंगे। अतः बुध का रत्न पन्ना धारण करने पर आप रोगग्रस्त हो सकते हैं। आपके परिश्रम में कमी आ सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर बौद्धिक योग्यता और शिक्षा का सुख प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। यह रत्न आपके भाई-बंधुओं से प्राप्त होने वाले सहयोग को भी बाधित कर सकता है। शत्रुओं की अधिकता आपकी प्रगति को धीमा कर सकती है। पन्ना रत्न आपको सेवकों और सहोदरों के प्रति आलोचनात्मक लेखन का स्वभाव दे सकता है। इसे धारण करने पर बुद्धिमानी के कार्यों में आपसे त्रुटि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

केतु

(16/06/2019 - 15/06/2026)

केतु की दशा में आपका मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, हीरा, नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, पन्ना व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि

ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(15/06/2026 - 15/06/2046)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, पुखराज, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(15/06/2046 - 15/06/2052)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(15/06/2052 - 15/06/2062)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, नीलम, पुखराज, मोती, लहसुनिया व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(15/06/2062 - 15/06/2069)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य, नीलम, मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं औरपन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(15/06/2069 - 16/06/2087)

नीलम, गोमेद, मूंगा, पुखराज, हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(16/06/2087 - 17/06/2103)

गुरु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, नीलम, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं औरपन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को भगवान शिव का अश्रु माना जाता है। रुद्राक्ष शब्द दो शब्दों के मेल से बना है - प्रथम 'रुद्र' जिसका अर्थ है भगवान शिव और द्वितीय 'अक्ष' जिसका अर्थ है आंसू। मान्यता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वे मोती स्वरूप बूंदें हैं, जिन्हें ग्रहण करने से समस्त प्रकृति में अलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव हृदय में पहुंचकर उसे जागृत करने में सहायक सिद्ध हुई।

भारतीय ज्योतिष में रुद्राक्ष की अत्यधिक उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गंभीर रोगों में यदि जन्मकुंडली के अनुसार सही रुद्राक्ष का उपयोग किया जाए, तो आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति और सामर्थ्य उसकी धारीदार मुखों पर निर्भर करती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

मुख्य रूप से एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष पाए जाते हैं। इनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता प्रत्येक मुख के अनुसार अलग-अलग होती है। रुद्राक्ष धारण करने से न केवल ग्रहों के अनुकूल फल प्राप्त होते हैं, बल्कि व्यक्ति शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहता है। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करना या उसकी माला धारण करना समस्त पापों और विघ्नों का नाश करता है - यह भगवान महादेव का वरदान है। हालांकि, इसे धारण करने की विधि उचित और मन की भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष के दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर उसके मुख निर्धारित किए जाते हैं। रुद्राक्ष के मध्य में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने वाली रेखा को 'मुख' कहा जाता है। सामान्यतः रुद्राक्ष में ये रेखाएं 1 से 14 मुखी तक होती हैं, किंतु कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी पाए जाते हैं। आधी या टूटी हुई रेखा को मुख नहीं माना जाता है। जितनी रेखाएं पूर्ण और स्पष्ट होती हैं, रुद्राक्ष उतने ही मुखी कहलाता है।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष के अलग-अलग महत्व और उसकी उपयोगिता का सविस्तार उल्लेख किया गया है:

एक मुखी (सूर्य ग्रह): यह उत्तम स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्मविश्वास, आध्यात्मिक उन्नति और प्रसन्नता प्रदान करता है। इससे अचानक धन लाभ, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार आता है और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

दो मुखी (चंद्र ग्रह): यह वैवाहिक सुख, मानसिक शांति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति और पारिवारिक सौहार्द प्रदान करता है। यह व्यापार में सफलता दिलाने में सहायक है और विशेष रूप से महिलाओं के लिए इसे अत्यंत उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी (मंगल ग्रह): यह शत्रुओं का शमन करने तथा रक्त संबंधी विकारों को दूर करने में विशेष रूप से सहायक होता है।

चार मुखी (बुध ग्रह): यह शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि, विवेक और कार्यक्षमता (जीवनी शक्ति) में वृद्धि प्रदान करता है।

पांच मुखी (गुरु ग्रह): शारीरिक आरोग्यता, आध्यात्मिक उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

छह मुखी (शुक्र ग्रह): यह प्रेम संबंधों, आकर्षण और स्मरण शक्ति में वृद्धि करता है। इसके प्रभाव से बुद्धि तीव्र होती है, कार्यों में पूर्णता आती है और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त होती है।

सात मुखी (शनि ग्रह): यह शनि दोष के निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति और विजय प्राप्ति में सहायक है। यह कार्य-व्यवसाय आदि में उन्नति और बढ़ोतरी कराने वाला माना जाता है।

आठ मुखी (राहु ग्रह): यह राहु ग्रह से संबंधित दोषों की शांति, ज्ञान प्राप्ति, चित्त की एकाग्रता और मुकदमों में विजय प्रदान करता है। यह दुर्घटनाओं व प्रबल शत्रुओं से रक्षा करता है तथा व्यापार में सफलता और उन्नति दिलाता है।

नौ मुखी (केतु ग्रह): यह केतु ग्रह से संबंधित दोषों की शांति, सुख-शांति और व्यापार में वृद्धि करता है। इसे धारण करने वाले की अकाल मृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं का भय भी दूर होता है।

दस मुखी (भगवान विष्णु/महावीर): यह कार्यक्षेत्र में प्रगति, स्थिरता और वृद्धि प्रदान करता है। इससे मान-सम्मान, कीर्ति, वैभव और धन की प्राप्ति होती है तथा सभी लौकिक और पारलौकिक कामनाएं पूर्ण होती हैं।

11 मुखी एवं इन्द्र ग्रह: आर्थिक लाभ व समृद्धशाली जीवन प्रदान करता है। इससे किसी भी वस्तु का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु: यह नेतृत्व शक्ति प्रदान कर व्यक्ति को शक्तिशाली और तेजस्वी बनाता है। यह विदेश यात्रा में सहायक है, ब्रह्मचर्य की रक्षा करता है तथा चेहरे का तेज और ओज बनाए रखता है। इससे शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इन्द्र ग्रह: यह सर्वजन आकर्षण, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा और मनोकामना प्राप्ति का कारक है। यह कामदेव का प्रतीक माना जाता है। ऊपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए

यह विशेष रूप से उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह: यह आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति और धन प्राप्ति में सहायक है तथा कष्टनिवारक माना जाता है। शनि की साढ़ेसाती या ढैया के समय यह विशेष रूप से कष्टों को दूर करने वाला है।

आपकी कुण्डली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की है, जो आपको प्रखर बुद्धि प्रदान करती है। मेष राशि अग्नि तत्व और चर राशि होने के कारण आप दृढ़ निश्चयी व व्यवहार कुशल हैं। आपके आंतरिक तथा बाह्य मनोभाव एक समान होते हैं। आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान हैं और दूसरों के अधीन रहना आपको पसंद नहीं है। आप जीवन में अपने पुरुषार्थ तथा उद्यम से उन्नति प्राप्त करते हैं। यदि कुंडली में मंगल, सूर्य और चंद्रमा अशुभ हों, तो माता-पिता व भाई-बहनों का सुख कम प्राप्त होता है। आपमें परिवर्तनशील स्वभाव और शीघ्र क्रोधित होकर प्रचंड रूप धारण करने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। अत्यधिक क्रोध के वश में होकर कई बार आप अपना नुकसान भी कर बैठते हैं।

6, 8 और 12वें भाव को 'त्रिक भाव' कहा जाता है। इन भावों के स्वामी और इनमें स्थित ग्रह जीवन में बाधाएं उत्पन्न करते हैं। षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का विचार किया जाता है। इसका स्वामी जिस भाव में बैठता है, उस भाव के शुभ फलों में कमी आती है। जातक को षष्ठेश की महादशा या अंतर्दशा में रोग, ऋण और शत्रुओं के कारण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। त्रिक भावों में अष्टम भाव को सर्वाधिक अशुभ माना जाता है। अष्टमेश जिस भाव में स्थित होता है, उस भाव के फलों का नाश करता है और वहां स्थित ग्रहों का नकारात्मक प्रभाव बढ़ जाता है। द्वादश भाव को 'व्यय भाव' कहते हैं क्योंकि यहाँ से विभिन्न प्रकार के खर्चों का विचार होता है। यह हानि, कर, अनिद्रा, शैया सुख, कारावास, विदेश यात्रा और मोक्ष का स्थान है। इस भाव का स्वामी और इसमें स्थित ग्रह इन विषयों से जुड़ी अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध एक विशेष रूप से अशुभ ग्रह है, क्योंकि वह छठे और तीसरे भाव का स्वामी है। इसी प्रकार, शुक्र भी दूसरे और सातवें भाव का स्वामी होने के कारण आपके लिए 'मारकेश' बन गया है। शनि दशमेश होने के कारण शुभ है, परंतु आयेश होने के कारण पुनः नकारात्मक प्रभाव दे सकता है। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकते हैं।

आपकी कुंडली में छठे और तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं। षष्ठेश बुध के प्रभाव से आपके अपने संबंधियों के साथ संबंध तनावपूर्ण हो सकते हैं। अन्य जातियों के व्यक्तियों के साथ आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता के कारण आपको समय-समय पर मानसिक और शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य में गिरावट का कारण रोगों की अधिकता हो सकती है। आपका धन रोगों और शत्रुओं से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने में व्यय हो सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी। शत्रुओं पर विजय पाने के लिए आपको चतुराई से काम लेना होगा। यह

योग आपको कम पराक्रमी बना सकता है और भाई-बहनों से मतभेद व खर्चों में वृद्धि दे सकता है। हालांकि, बुध इस भाव में रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर कई क्षेत्रों में सफलता भी दिलाता है।

अष्टमेश मंगल नकारात्मकता, क्रूरता और शत्रुता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि हो रही है। आप आक्रामक रुख अपनाते हुए अपने पराक्रम से शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा या अंतर्दशा के दौरान लड़ाई-झगड़े, दुर्घटनाएं और शत्रुओं के कारण धन, पद तथा प्रतिष्ठा की हानि की संभावना है। इस अवधि में आपको अपने मन और मस्तिष्क पर नियंत्रण रखना चाहिए, कटु वचनों का त्याग करना चाहिए और दुर्घटनाओं से सावधानी बरतनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किए गए कार्य पूर्ण होंगे, किंतु स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान है और आपकी कुंडली में इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि स्थित है। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि संबंध चतुर्थ भाव पर होने के कारण आपको घर, भूमि-संपत्ति और माता का सुख प्राप्त होगा। हालांकि, यह स्थिति दीर्घकालिक निवेश और विदेश संबंधी कार्यों में आपके खर्चों को बढ़ाएगी। वित्तीय मामलों के लिए बृहस्पति की यह स्थिति विशेष अनुकूल नहीं है।

आपकी कुण्डली के छठे भाव में सूर्य स्थित है। इस भाव में सूर्य शत्रुओं का नाश करने वाला होता है, परन्तु यह स्वभाव में क्रोध, अहंकार और कामुकता भी दे सकता है। इसके प्रभाव से मामा या मौसी को कष्ट, उत्साह की कमी, छाती के रोग और ऋण संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। हृदय संबंधी रोग भी स्वास्थ्य में गिरावट का कारण बन सकते हैं।

द्वादश भाव का चन्द्रमा आपको बचपन में स्वास्थ्य संबंधी कष्ट और शत्रुओं की अधिकता दे सकता है। इससे धन की हानि और कभी-कभी असत्य बोलने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से चन्द्रमा की यह स्थिति अनुकूल नहीं मानी जाती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में पिरोकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध करके 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदोपरान्त शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाएं और सामर्थ्यानुसार दान करें। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में कमी आएगी। कुण्डली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप 'शिव कृपा रुद्राक्ष माला' भी धारण कर सकते हैं, जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच आपको दशा या गोचर के विचार के बिना जीवन भर धारण करना चाहिए, क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुंमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दु:खी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा शापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1- परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2- आनुवंशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3- परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4- परिवार में बच्चों द्वारा अपमान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5- गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6- परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7- परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फ़साद होना।
8- कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।

9- बुरी आदतों की लत लग जाना।
10- परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11- शिक्षा में बाधाएं आना।
12- स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13- माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14- परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15- परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1- श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2- रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3- यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1- श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र-दक्षिणा आदि दें।
2- यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3- प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर क्षीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5- पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6- रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7- लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8- हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9- गया या त्र्यम्बकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10- नारायणबलि पूजा करवाएं।
11- पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

12- पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13- श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1- पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2- पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3- पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4- पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5- पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6- बुजुर्गों का सम्मान करें।
7- पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8- घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9- पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है, अतः दादाजी द्वारा किए गए पापकर्म आपके पितृदोष का कारण हैं। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानों, वृद्ध ब्राह्मणों और जीवनसाथी को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है, परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षणों में से किसी प्रकार के कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है, तो आपको

पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभ कार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यम्बकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

लग्न फल

ज्योतिषीय गणना के अनुसार, आपका जन्म उस समय हुआ जब क्षितिज पर मेष लग्न उदित हो रहा था। आपका जन्म भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण, वृश्चिक राशि के नवांश और धनु राशि के द्रेष्काण में हुआ था। ग्रहों की स्थिति आपके जीवन का जो चित्र प्रस्तुत करती है, उसके अनुसार यदि आप अपनी योजनाओं के प्रति पूर्ण आश्वस्त होकर समय पर कार्य संपन्न कर सकीं, तो आप निश्चित रूप से अपने उद्देश्यों में सफल होंगी।

सामान्य तौर पर यह स्पष्ट है कि आप दीर्घायु होंगी और एक सुखद व स्वस्थ जीवन का आनंद प्राप्त करेंगी। आप निरोग और पश्चाताप मुक्त जीवन व्यतीत करेंगी। वृश्चिक नवांश का प्रभाव आपके लिए एक सुरक्षा कवच के समान है। यह संभव है कि आप अपने जीवन की कमियों को दूर कर लेंगी, अन्यथा आप हीनता और शारीरिक रोगों का शिकार हो सकती हैं। यह आवश्यक नहीं है कि संकट आने से पूर्व आपको उसकी सूचना मिले। आप अपार शक्ति, साहस और सामर्थ्य से संपन्न हैं। आप अपने जीवन में लाभ प्राप्त करने और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में पूर्णतः सक्षम होंगी।

आप अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं और बुराइयों को दूर करने में पूरी तरह समर्थ हैं। आप अपनी बुद्धि के बल पर अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए, बिना किसी बाहरी सहयोग के, पूर्ण तन्मयता और आत्मविश्वास के साथ कार्य संपन्न कर सकेंगी। ईश्वर आपको निश्चित रूप से निर्भयता प्रदान करेंगे। आप अपने कार्यों की सिद्धि हेतु लंबी दूरी तय करने में भी किसी की सहायता या साथ लेने की परवाह नहीं करेंगी।

वास्तव में, आपके जीवन के 25वें वर्ष से आपका स्वर्णिम काल प्रारंभ होगा। आप अपार धन-संपदा और समृद्धि से संपन्न होंगी। आप अत्यधिक उन्नति प्राप्त कर धन, भूमि, भवन, वाहन और सेवकों के सुख से युक्त होंगी। आपके सेवक आपके आदेशों का निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। आपके सुखमय जीवन के संचालन में आपके अधीनस्थ और अनुचर सदैव आपके निर्देशों के अनुसार ही कार्य करेंगे।

आप स्वभावतः बहुत अधिक कामुक हैं। यदि आप क्षणिक आनंद के लिए अनैतिक संबंधों या विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ काम-सुख हेतु जोखिम उठाएंगी, तो यह किसी भयंकर रोग का सूचक हो सकता है। आपके लिए यही उत्तम होगा कि आप अपनी मर्यादा में रहकर अपने अधिकृत जीवनसाथी के साथ ही शारीरिक सुख-भोग का आनंद प्राप्त करें।

यदि आप अपनी उच्चाकांक्षाओं को पूर्ण करना चाहती हैं, तो केवल स्वप्न देखने के बजाय कठिन परिश्रम के प्रति सजग रहें। ऐसा करने से आप निश्चित रूप से अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में समर्थ हो जाएंगी।

आपके समक्ष चाहे जो भी व्यवधान आए, आपमें यह सामर्थ्य है कि आप अपनी जन्मजात

नेतृत्व क्षमता, साहस और महत्वाकांक्षा के बल पर उसे दूर कर लेंगी।

यदा-कदा आप क्रोधित होकर अत्यधिक हठ करने लगती हैं और अपने मित्रों से असंतुष्ट होकर उनके साथ उचित व्यवहार नहीं कर पाती हैं।

आपको अपने मित्रों की लंबी सूची के अनुसार उनसे मिलने-जुलने के कार्यक्रमों में कटौती करनी चाहिए। फिर भी आपके कुछ ऐसे मित्र हैं जो पूर्ण निष्ठा से आपकी उन्नति के मार्ग में सहयोग करते हैं। आपको मित्रता के उद्देश्य से की जाने वाली बार-बार की यात्राओं पर कुछ समय के लिए विराम लगाना चाहिए। अपनी यात्राओं के दौरान आप देश के विभिन्न स्थानों के व्यक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करेंगी।

आप अपना पारिवारिक जीवन सुखद रूप से व्यतीत करेंगी। आपकी साहसिक प्रवृत्ति और अतिरिक्त सक्रियता के कारण कुछ लोग आपसे ईर्ष्या भी रख सकते हैं। आप अपनी माता के प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी और आपका दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा। आप शांत मन से परिवार के कल्याण में समय देंगी, हालांकि आपके स्वभाव की उत्तेजना कभी-कभी परिवार के सदस्यों को कष्ट पहुँचा सकती है।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार और सोमवार अत्यंत शुभ एवं भाग्यशाली दिन हैं। वहीं शुक्रवार, शनिवार और बुधवार आपके लिए प्रतिकूल और अधिक खर्च कराने वाले साबित हो सकते हैं।

आपके लिए अंक 9 और अंक 1 विशेष रूप से लाभप्रद और शुभ हैं।

आप अपने जीवन में लाल, पीले और स्वर्णिम रंगों को प्राथमिकता देंगी। आपको हर स्थिति में काले रंग के प्रयोग से बचना चाहिए।

ग्रह फल

सूर्य

छठे भाव में सूर्य आपको पार्श्व रहकर काम करने वाली बनाता है। लेकिन, आप जो कुछ भी करती हैं, उसे बहुत अच्छी तरह से करना चाहती हैं। आपके मानक उच्च हैं और आप चाहती हैं कि आपका सारा काम यथासंभव पूर्ण हो। आपको उपकरणों का उपयोग करना सीखने में आनंद आता है, और आप तकनीक सीखने और मॉडल बनाने में काफी समय बिता सकती हैं। शिल्प के साथ-साथ, आप मानसिक कौशल में महारत हासिल करने और उसे निखारने का भी आनंद लेती हैं। और, इस क्षेत्र में भी, आप अत्यंत मेहनती और सावधान रहेंगी।

आपकी बड़ी खूबियों में से एक यह है कि यदि आप जानती हैं कि बाद में कुछ ऐसा होने वाला है जो प्रतीक्षा करने योग्य है, तो आप उस समय के लिए अच्छे समय को टालने में सक्षम हैं। आप दीर्घकालिक लक्ष्यों के प्रति बहुत चिंतित हैं और अपनी उम्र के अधिकांश लोगों की तुलना में उनके साथ बने रहने के बारे में अधिक अनुशासित हैं।

मुक़दमेबाजी आपके पक्ष में होगी और आप इसके लिए भुगतान करने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त धन अर्जित करेंगी।

आपको अपने मामा और मौसी का प्यार मिला है जो आपके लिए समर्थन का स्रोत होगा।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में मित्र राशि मीन में चंद्रमा आपको धनी और प्रसिद्ध बनाता है। आप अपना पैसा संपत्ति पर खर्च करना पसंद करती हैं। चाहे आप इसे बाद में बेचने का निर्णय लें या इसे अपने पास रखें, यह आप पर निर्भर करता है लेकिन किसी भी तरह से आपको लाभ होगा। बाद में, इस संपत्ति को लेकर विवाद हो सकते हैं लेकिन इन्हें आसानी से सुलझा लिया जाएगा और सही मालिक के

बारे में किसी को कोई संदेह नहीं रहेगा।

आप व्यापार पर भी पैसा खर्च करेंगी और काफी लाभ कमाते हुए बहुत अच्छा करेंगी।

विदेशी यात्राओं के संकेत हैं और यात्रा की शौकीन होने के कारण आप वहां आनंद उठाएंगी। संभवतः आप कुछ संपत्ति खरीदने के लिए विदेश जाएंगी और उस स्थान से इतनी मोहित हो सकती हैं कि अंततः वहीं बस जाएं।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा-कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान-पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा-कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। साथ ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

धनु राशि के नौवें भाव में मंगल यह संकेत देता है कि आपको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बहुत अधिक खर्च करना होगा। आपका अपने जन्मस्थान से दूर के स्थानों से गहरा संबंध होगा।

आप अपने दृष्टिकोण से दृढ़ता से जुड़ी हुई हैं, और यदि चुनौती दी गई, तो आप अपनी राय के लिए बहुत संघर्ष करेंगी। आप तर्क करने में कुशल हैं और यदि उकसाया जाए, तो आपकी वाणी काफी तीखी हो जाती है। एक ओर, आप अपने विश्वासों के प्रति काफी आत्म-धर्मी और संकीर्ण रूप से कट्टर हो सकती हैं, लेकिन आप दलितों के अधिकारों की रक्षा करने में साहसी भी हो सकती हैं।

आप केवल मानसिक स्तर पर शामिल नहीं होती हैं। आप अपने विश्वासों के अनुसार कार्य करती हैं। शायद आप जो मानती हैं उसके साथ इतनी दृढ़ता से पहचान बनाती हैं कि आपको महसूस होता है कि आपके विचार वास्तव में आपका एक शारीरिक हिस्सा हैं। जाहिर है, इससे आपके लिए किसी भी मामले में किसी और की स्थिति को समझना मुश्किल हो जाता है। कोशिश करें कि आप अपने विचारों में इतनी न खो जाएं कि आप किसी और के विचारों पर विचार ही न करें।

यह स्थिति यह भी संकेत देती है कि आप काफी बेचैन हैं और जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ेगी, आप दुनिया भर में यात्रा करना और उसे देखना चाह सकती हैं।

मंगल उच्च शिक्षा में आपकी रुचि को कम कर देता है और आपको उच्च शिक्षा के प्रति उदासीन बना देता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है, अतः भाई-बहनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा-कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं वे यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति में सहायता करते रहेंगे। आपकी भाग्योन्नति में उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख-दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी, परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा-कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा, लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख-दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

सातवें भाव में तुला राशि में बुध स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि आपका विवाह किसी धनी व्यक्ति से शीघ्र होगा। आप और आपके पति एक प्रसन्नचित्त युगल बनेंगे, दोनों ही दूसरों को प्रभावित करने के लिए अच्छे और सुरुचिपूर्ण कपड़े पहनेंगे। आपका विवाह किसी यात्रा के परिणामस्वरूप या आपके किसी रिश्तेदार के माध्यम से या यहाँ तक कि आपके लेखन के कारण भी हो सकता है, जिसकी सामान्य रूप से विपरीत लिंग द्वारा सराहना की जाएगी।

आप दूसरों के साथ व्यावसायिक साझेदारी करके और अनुबंधों के माध्यम से आर्थिक रूप से लाभ प्राप्त कर सकती हैं।

गुरु

तीसरे भाव में मेष राशि का बृहस्पति इंगित करता है कि आप प्रतिभाशाली हैं। आप ऊर्जावान और उत्साही हैं। आपमें वीरता और नेतृत्व के गुण हैं। आप सफलता, नाम, प्रसिद्धि और पहचान पाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगी।

आपके भाई या उनकी अनुपस्थिति में, आपके चचेरे भाई, दयालु, नेक और उदार हैं। वे वफादार, आज्ञाकारी और विश्वसनीय हैं। आपके भाई कई तरह से आपकी मदद करेंगे।

आप लिखने की शौकीन हैं और एक अच्छी संपादिका हो सकती हैं। आप धार्मिक और अच्छे प्रकाशन पढ़ेंगी। आप विभिन्न विषयों पर अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए अपने खाली समय का उपयोग करेंगी।

यद्यपि आप संगीत, सिनेमा, ओपेरा, फिल्मों और अच्छे गानों की शौकीन हैं, लेकिन आप

पहले अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने और बाद में आनंद लेने में विश्वास करती हैं।

शुक्र

सिंह राशि में पंचम भाव में शुक्र उच्च शिक्षा का संकेत देता है। आपके पास असाधारण प्रतिभा है। आप एक पुत्र संतान के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हो सकती हैं क्योंकि वह स्वस्थ नहीं हो सकता है। सट्टेबाजी के माध्यम से हानि और बच्चों के साथ शत्रुता के भी संकेत हैं।

शनि

मित्र शुक्र के खेमे में द्वितीय भाव में शनि संकेत देता है कि आप आर्थिक रूप से समृद्ध हैं। आपकी अपनी प्रतिष्ठा है, फिर भी भूमि और संपत्ति के मामलों में परेशानियाँ संकेतित हैं। आप फिजूलखर्ची करती हैं। मित्रों और परिचितों के माध्यम से भी कुछ लाभ के संकेत हैं।

राहु

मिथुन राशि में तीसरे भाव में राहु संकेत देता है कि आप अपने शत्रुओं को आसानी से नहीं भूलती हैं।

मेष लग्न इंगित करता है कि आपके अपने भाइयों और बहनों के साथ अच्छे संबंध होंगे लेकिन राहु आपको इसका आनंद नहीं लेने देता। तीसरे भाव में राहु इंगित करता है कि आपकी संगीत और नृत्य में रुचि नहीं है और आप अपने खाली समय के अलावा वाद्य यंत्र नहीं बजाती हैं। आप प्रचार और प्रकाशन के माध्यम से प्रसिद्धि और धन प्राप्त करेंगी।

केतु

नौवें भाव में केतु आपको साहसी बनाता है। आपका भाग्य परिवर्तनशील है। आपके जीवन में अस्थिरता का संकेत है। आपको कुछ बाधाओं और विरोध का सामना करना पड़ेगा।

नौवें भाव में धनु राशि का केतु यह दर्शाता है कि आप सर्वशक्तिमान में विश्वास और आस्था रखती हैं।

आप पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों में पूरी तरह से शामिल हो जाएंगी। आप कुछ आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिए एकांत स्थानों में और शांतिपूर्ण तरीके से पूजा करेंगी। हालांकि, आप अकेले के बजाय लोगों के साथ पवित्र स्थानों और मंदिरों में जाना पसंद करेंगी।

लंबी यात्राओं के संकेत हैं और उनसे आपको बहुत लाभ होगा। यद्यपि मेष लग्न इंगित

करता है कि आपके पोते-पोतियां अच्छे और शिक्षित हैं, केतु आपको अपने पोते-पोतियों से अधिक सुख प्राप्त करने में सक्षम नहीं बनाता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

मेष लग्न के उदय होने पर जन्म लेने वाली जातिकाएँ आमतौर पर मध्यम कद के छरहरे, फिर भी मांसल शरीर वाली होंगी, उनमें वजन बढ़ने की प्रवृत्ति नहीं होती है, जिससे उनका व्यक्तित्व गठीला और रंग सुर्ख होता है, उनका चेहरा अंडाकार और भौहें घनी होती हैं। अनिवार्य रूप से उनकी आँखें धूसर या धूसर भूरे रंग की होती हैं। सिर पर या कनपटी के दोनों ओर निशान या चोट का निशान होने की स्पष्ट संभावना होती है।

मेष राशि की जातिकाएँ अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेती हैं और उनकी अंतर्निहित शारीरिक बनावट रोगों का प्रतिरोध करने की शक्ति रखती है। यदि वे शाकाहारी भोजन का पालन करती हैं और नशीले पेय पदार्थों से परहेज करती हैं, तो वे स्वस्थ रह सकती हैं। लेकिन चूंकि उनमें चोट लगने की संभावना अधिक होती है, इसलिए उन्हें अपनी गतिविधियों में अत्यधिक सावधान रहना चाहिए, ऐसा न करने पर उनके दुर्घटनाग्रस्त होने का जोखिम रहता है, विशेष रूप से सिर में। उन्हें पर्याप्त आराम और नींद लेनी चाहिए, और अपनी तनावग्रस्त नसों को आराम देने की आदत डालनी चाहिए।

यह आवश्यक है, क्योंकि स्वभाव से मेष राशि की जातिकाएँ कार्य-उन्मुख होती हैं, प्रतिकूलताओं के खिलाफ लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहती हैं। स्वतंत्रता की भावना होने के कारण, वे अपने अधिकारों की रक्षा करने और अन्याय का विरोध करने के लिए पूरी कोशिश करेंगी। सरल, स्पष्ट और मुखर, उनके पास आकर्षक व्यवहार होता है जो विपरीत लिंग को आकर्षित करता है। प्रेम करने में उत्साही, वे अपने पति पर चिरस्थायी स्नेह बरसाती हैं। केवल, उन्हें घर में प्रभावशाली साथी बनने की अपनी इच्छा पर अंकुश लगाना चाहिए। उनके रिश्तेदारों के साथ उनके संबंध बहुत मजबूत नहीं होंगे और अक्सर उनके संबंधों में तनाव रहता है।

जीवन निरंतर संघर्षों और बदलती किस्मत वाला होगा। शत्रुओं की कोई कमी नहीं होगी, लेकिन मेष राशि की जातिकाएँ उन पर विजय पाने में सक्षम हैं। अपने आक्रामक स्वभाव के कारण, वे कार्यकारी पदों पर चमकेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म के समय, द्वितीय भाव में वृषभ राशि उदय हो रही थी। इस राशि के स्वामी शुक्र संकेत देते हैं कि आपमें धन और सांसारिक संपत्तियां प्राप्त करने की कला होगी। यह राशि दर्शाती है कि आपको कभी विरासत प्राप्त होगी, क्योंकि आप रिश्तेदारों की सद्भावना और सच्चे स्नेह का आनंद लेती हैं। आप संपदा, बगीचे आदि प्राप्त करेंगी और बागवानी आपका शौक होगा। द्वितीय भाव यह भी संकेत देता है कि आप जिद्दी और दृढ़ होंगी।

आप एक सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक जीवन, घर पर सुख-सुविधाओं और शांति का आनंद लेंगी। आप समाज में शांति और पद को महत्व देती हैं। आप उदार और भावुक हैं। आपकी भूख अच्छी है और आपको विशेष रूप से मिठाइयाँ पसंद हैं।

मित्र शुक्र के खेमे में द्वितीय भाव में शनि संकेत देता है कि आप आर्थिक रूप से समृद्ध हैं। आपकी अपनी प्रतिष्ठा है, फिर भी भूमि और संपत्ति के मामलों में परेशानियाँ संकेतित हैं। आप फिजूलखर्ची करती हैं। मित्रों और परिचितों के माध्यम से भी कुछ लाभ के संकेत हैं।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म के समय मिथुन राशि तीसरे भाव में स्थित थी। इस राशि का स्वामी बुध होने के कारण यह संकेत मिलता है कि आपका मन बहुत सक्रिय, अशांत और परिवर्तन का शौकीन है। जब तक कुछ उत्तेजक न मिले, आप आसानी से ऊब सकती हैं। आप निरंतर गतिविधि की इच्छा रखती हैं और अपने आस-पास की दुनिया को अधिकांश लोगों की तुलना में तेजी से मानसिक रूप से संसाधित करती हैं। इससे आपको विद्यालय में औसत से बेहतर छात्रा होना चाहिए।

आप काफी स्पष्ट वक्ता हैं और अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में अच्छी हैं, लेखन में भी। आपको युवावस्था में बहुत पढ़ना चाहिए, क्योंकि आपका मन इस तरह से बहुत सारी जानकारी अवशोषित कर सकता है।

आपको यात्रा करने का भी शौक हो सकता है, और निश्चित रूप से आपको बहुत लंबे समय तक एक ही स्थान से बंधे रहना पसंद नहीं है। भले ही आप अपने निकटतम दायरे से बहुत दूर यात्रा न करें, आप हमेशा घूमना-फिरना चाहती हैं, भले ही वह सिर्फ अपनी कुर्सी से उठकर टहलना ही क्यों न हो।

आपकी याददाश्त अच्छी है। आप उच्च शिक्षा, शोध और दर्शन की ओर झुकी हुई हैं। आपको लेखन के माध्यम से ख्याति प्राप्त होगी। आपके पास अत्यधिक मानसिक शक्ति है और आप बौद्धिक हैं। आप अपनी शारीरिक शक्ति की तुलना में अपने मस्तिष्क का अधिक उपयोग करती हैं। आप बुद्धिमान और ज्ञानी होने के साथ-साथ बहादुर और साहसी भी हैं।

आप एक अच्छी लेखिका हैं और अपने विचारों को अच्छी तरह व्यक्त कर सकती हैं। आप उपन्यास और अन्य साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ने की शौकीन हैं। आप कहानियाँ और कविताएँ लिख सकती हैं। आपके लेख आपको प्रसिद्धि और प्रचुर धन दिलाएंगे। आप कलात्मक कार्यों में रुचि लेंगी। आप एक संपादक, समाचार संवाददाता, सूचना अधिकारी या पत्रकार बनने की आकांक्षा रख सकती हैं। आप संगीत, नृत्य और वाद्य यंत्र बजाने की बहुत शौकीन हो सकती हैं।

अपने सहोदरों (भाई-बहनों) के साथ आपके उत्कृष्ट संबंध रहेंगे। आप अपने चचेरे भाई-बहनों के प्रति दयालु रहेंगी और उन पर धन तथा समय व्यय करेंगी। पड़ोसियों के स्थानों की छोटी यात्राएँ आपके लिए लाभकारी हैं।

तीसरे भाव में मेष राशि का बृहस्पति इंगित करता है कि आप प्रतिभाशाली हैं। आप ऊर्जावान और उत्साही हैं। आपमें वीरता और नेतृत्व के गुण हैं। आप सफलता, नाम, प्रसिद्धि और पहचान पाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगी।

आपके भाई या उनकी अनुपस्थिति में, आपके चचेरे भाई, दयालु, नेक और उदार हैं। वे वफादार, आज्ञाकारी और विश्वसनीय हैं। आपके भाई कई तरह से आपकी मदद करेंगे।

आप लिखने की शौकीन हैं और एक अच्छी संपादिका हो सकती हैं। आप धार्मिक और अच्छे प्रकाशन पढ़ेंगी। आप विभिन्न विषयों पर अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए अपने खाली समय का उपयोग करेंगी।

यद्यपि आप संगीत, सिनेमा, ओपेरा, फिल्मों और अच्छे गानों की शौकीन हैं, लेकिन आप पहले अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने और बाद में आनंद लेने में विश्वास करती हैं।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

सामान्य प्रवृत्ति यह है कि जब चौथे भाव में कर्क राशि उदय हो रही हो, तो जन्म लेने वाली जातिका एक आदर्श माँ के आशीर्वाद से धन्य होगी जो पूरे परिवार के लिए निरंतर शक्ति का स्रोत होगी। ईमानदार, वफादार और समर्पित, वह अपने पति को आध्यात्मिक सहायता और उन बच्चों को मार्गदर्शन प्रदान करेगी जिन्हें वह बहुत प्यार करती है।

केवल जब वह खुद को उपेक्षित पाती है तो वह मूडी हो जाती है। यह उसके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि यह उसके पाचन और छाती, फेफड़ों और गले को प्रभावित कर सकता है। इसलिए उसे हर समय खुश रखना आवश्यक है।

एक कर्क राशि की जातिका के लिए जीवन के उत्तरार्ध में पैतृक संपत्ति विरासत में मिलना कोई असामान्य बात नहीं है। गुप्त खजाने की लालसा करना चाँद माँगने जैसा हो सकता है, लेकिन यह संभव है कि सट्टेबाजी के माध्यम से या खनन या अनुबंध जैसी पृथ्वी से जुड़ी वस्तुओं के व्यापार के माध्यम से किसी को अप्रत्याशित लाभ हो। आप अपना स्वयं का घर भी प्राप्त कर सकती हैं। यह आपकी मुख्य महत्वाकांक्षाओं में से एक को पूरा करेगा क्योंकि आप सभी सुख-सुविधाओं वाले बंगले के लिए बहुत विशेष हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि कम उम्र से ही आप अच्छी आवासीय सुविधाओं की अभ्यस्त होंगी। आप वाहन भी खरीद सकती हैं।

शिक्षा के संबंध में, आप अपनी रुचि के अनुसार अध्ययन करेंगी। यदि आप उच्च शैक्षणिक योग्यता की इच्छा रखती हैं, विशेष रूप से विज्ञान में, तो इसे प्राप्त करना आसान नहीं होगा। इसके लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। आपके लिए अध्ययन के आदर्श विषय साहित्य, गणित और व्यवसाय प्रशासन हैं।

आपका अन्यथा स्वस्थ स्वास्थ्य आपके बुढ़ापे में कमजोर हो सकता है, जब छाती और फेफड़े परेशानी का कारण बन सकते हैं, जिसका मूल वंशानुगत हो सकता है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म के समय पांचवें भाव में सिंह राशि उदय हो रही थी जो दर्शाती है कि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं। 5वें भाव में इस राशि में जन्म लेने के कारण आप नेक, उदार और दरियादिल हैं। आप मानव जाति और अन्य सभी प्राणियों के प्रति दयालु और मददगार हैं। आप स्वेच्छा से सभी की मदद करेंगी।

आपको उच्च शिक्षा से प्रेम है। आप धार्मिक हैं और वैदिक ज्ञान तथा गूढ़ विद्या सीखती हैं। आप संतानों से संपन्न हैं जो वृद्धावस्था में आपके सुख का कारण बनेंगे, युवावस्था में आप प्रेम में पड़ सकती हैं, लेकिन पारंपरिक तरीके से विवाह कर सकती हैं। पेट की समस्याओं से खुद को बचाएं। आप जनता में एक अच्छी छवि बनाने का प्रयास करती हैं। आप आधिकारिक और प्रभावशाली हैं। आप अधीनता से घृणा करती हैं। आप कुछ मामलों में अपने जीवनसाथी से भिन्न मत रखेंगी।

सिंह राशि में पंचम भाव में शुक्र उच्च शिक्षा का संकेत देता है। आपके पास असाधारण प्रतिभा है। आप एक पुत्र संतान के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हो सकती हैं क्योंकि वह स्वस्थ नहीं हो सकता है। सट्टेबाजी के माध्यम से हानि और बच्चों के साथ शत्रुता के भी संकेत हैं।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म के समय कन्या राशि छठे भाव में स्थित थी, इस भाव का स्वामी बुध यह दर्शाता है कि आप बारीकियों पर ध्यान देती हैं, इसलिए आप उन विषयों के बारे में सीख सकती हैं जिनमें सावधानीपूर्वक सोच और जटिल तकनीकों को सीखने की आवश्यकता होती है। तकनीकें जितनी जटिल होंगी, आप उन्हें उतना ही बेहतर पसंद करेंगी। साथ ही, आपके हाथों में कुशलता होने की संभावना है, क्योंकि आप शिल्प कौशल के उच्च स्तर तक पहुँचने के लिए बहुत सावधानी से काम करती हैं। आप जो कुछ भी सीखती हैं उसे व्यावहारिक उपयोग में लाना चाहती हैं, क्योंकि आपको लगता है कि आप जो कुछ भी करती हैं वह काम पूरा करने के लिए एक उपयोगी उपकरण के रूप में काम करना चाहिए।

आप अपनी पढ़ाई में अच्छी हैं, क्योंकि आप अपने सभी काम सावधानी से करती हैं। जैसे-जैसे आप बड़ी होंगी, आप विचारों और सूचनाओं के साथ काम करने में बहुत कुशल हो जाएंगी। पुस्तकालय कार्य, विद्वता या किसी भी क्षेत्र जिसमें विचारों और डेटा को व्यवस्थित और वर्गीकृत करने की आवश्यकता होती है, में यह एक बहुत ही उपयोगी क्षमता है। यहाँ तक कि जब आप युवा होती हैं, तब भी आपको टिकटों, शंखों, सिक्कों या ऐसी ही चीजों को इकट्ठा करने और वर्गीकृत करने का शौक हो सकता है।

आप जीवन भर अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेंगी, हालांकि आप गरिष्ठ भोजन और मिठाइयों की शौकीन हैं, आपके पेट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और आप बुढ़ापे तक ऐसे भोजन का आनंद ले सकती हैं।

आप स्वभाव से शांत हैं, इस कारण आपके रिश्तेदार आपकी ओर आकर्षित होते हैं और आपकी अत्यधिक प्रशंसा करते हैं। आप धैर्यवान और कूटनीतिज्ञ भी हैं। इन गुणों के कारण आपको सरकारी अधिकारियों से बहुत सहयोग प्राप्त होगा।

आपके धन के मामले सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझ जाएंगे। यदि आपको कभी इसका उपयोग करना पड़े, तो मुकदमेबाजी सफल होगी। आप खर्चीली हैं लेकिन चूंकि आपकी आय आपके खर्च से अधिक होगी, इसलिए यह पर्याप्त होगी। आप पर बहुत कर्ज होगा, लेकिन साथ ही आप बुद्धिमानी से निवेश भी करेंगी।

धनी होने के कारण आपके पास बड़ी संख्या में नौकर होंगे। आपके नौकर वफादार और निष्ठावान होने के साथ-साथ ईमानदार भी होंगे।

आपको अपने मामा और मौसियों के सहयोग का सौभाग्य प्राप्त है। आपकी मौसियां आप पर बहुत स्नेह बरसाएंगी जो आपके लिए खुशी का स्रोत होगा।

छठे भाव में सूर्य आपको पार्श्व रहकर काम करने वाली बनाता है। लेकिन, आप जो कुछ भी

करती हैं, उसे बहुत अच्छी तरह से करना चाहती हैं। आपके मानक उच्च हैं और आप चाहती हैं कि आपका सारा काम यथासंभव पूर्ण हो। आपको उपकरणों का उपयोग करना सीखने में आनंद आता है, और आप तकनीक सीखने और मॉडल बनाने में काफी समय बिता सकती हैं। शिल्प के साथ-साथ, आप मानसिक कौशल में महारत हासिल करने और उसे निखारने का भी आनंद लेती हैं। और, इस क्षेत्र में भी, आप अत्यंत मेहनती और सावधान रहेंगी।

आपकी बड़ी खूबियों में से एक यह है कि यदि आप जानती हैं कि बाद में कुछ ऐसा होने वाला है जो प्रतीक्षा करने योग्य है, तो आप उस समय के लिए अच्छे समय को टालने में सक्षम हैं। आप दीर्घकालिक लक्ष्यों के प्रति बहुत चिंतित हैं और अपनी उम्र के अधिकांश लोगों की तुलना में उनके साथ बने रहने के बारे में अधिक अनुशासित हैं।

मुक़दमेबाजी आपके पक्ष में होगी और आप इसके लिए भुगतान करने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त धन अर्जित करेंगी।

आपको अपने मामा और मौसी का प्यार मिला है जो आपके लिए समर्थन का स्रोत होगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

सातवें भाव में तुला राशि के समय जन्म लेने वाली जातिकाएं बहुत ही वांछनीय पति पाने के लिए पर्याप्त भाग्यशाली होंगी। सामान्य तौर पर, एक ऐसा साथी पाने की उनकी महत्वाकांक्षा, जो न केवल आकर्षक हो बल्कि बुद्धिमान और सक्षम भी हो, पूरी होगी।

लेकिन, ऐसे शानदार गुणों से संपन्न होने के कारण, पति का ही बोलबाला रहेगा और वह वास्तव में अपनी शर्तें थोपेगा। इसलिए, घर में गौण भूमिका निभाने से बचने के लिए आपको चतुराई और धैर्य से काम लेना होगा। अपनी उम्मीदों पर खरा उतरने वाला साथी पाने के लिए आपके लिए तुला, धनु या सिंह राशि के जीवनसाथी की तलाश करना बेहतर होगा। तब आप दोनों समान विचारधारा वाले दंपत्ति होंगे।

आपके वैवाहिक संबंध काफी अच्छे रहेंगे, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि आपके पति, जो पारिवारिक प्रतिष्ठा बनाए रखने में बहुत रुचि रखते हैं, एक अच्छे मेजबान साबित होंगे। लेकिन किसी भी सभा में, अपने पति के सामने दूसरों की प्रशंसा करने से पहले आपको दो बार सोचना होगा। वे दूसरों की प्रशंसा सहन करने के लिए बहुत अभिमानी और ईर्ष्यालु होंगे।

आप दोनों के साथ एक छोटी सी समस्या है। आप फिजूलखर्ची करने की आदी हैं, जिससे आपके बैंक बैलेंस में गिरावट आती है। इसलिए, आप दोनों को बचत की आदत डालनी होगी ताकि आपको बुढ़ापे में पैसों की तंगी महसूस न हो। वैसे भी, आपके खर्चे अधिक रहेंगे क्योंकि आपके पति आपसे उम्मीद करते हैं कि आप उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करके पूरे परिवार की अच्छी देखभाल करेंगी।

सातवें भाव में तुला राशि में बुध स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि आपका विवाह किसी धनी व्यक्ति से शीघ्र होगा। आप और आपके पति एक प्रसन्नचित्त युगल बनेंगे, दोनों ही दूसरों को प्रभावित करने के लिए अच्छे और सुरुचिपूर्ण कपड़े पहनेंगे। आपका विवाह किसी यात्रा के परिणामस्वरूप या आपके किसी रिश्तेदार के माध्यम से या यहाँ तक कि आपके लेखन के कारण भी हो सकता है, जिसकी सामान्य रूप से विपरीत लिंग द्वारा सराहना की जाएगी।

आप दूसरों के साथ व्यावसायिक साझेदारी करके और अनुबंधों के माध्यम से आर्थिक रूप से लाभ प्राप्त कर सकती हैं।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म के समय, वृश्चिक राशि आठवें भाव में स्थित थी। मंगल, इस भाव का स्वामी होने के नाते यह संकेत देता है कि आप व्यावहारिक हैं और इसलिए गुप्त विज्ञान में आपकी रुचि नहीं है।

यह स्पष्ट रूप से संकेत दिया गया है कि जहाँ तक वित्त का संबंध है आप भाग्यशाली हैं और किसी भी अन्य संपत्ति में जिसे आप चाहती हैं जैसे कि घर, संपत्ति, विरासत आदि। आपके पति या विरासत के माध्यम से संपत्ति में वृद्धि होगी या आप अपने पूर्वजों या मृत रिश्तेदारों से कुछ विरासत में प्राप्त कर सकती हैं।

अपने स्वयं के पर्याप्त भौतिक सुख-साधन होने के अलावा, आपको विवाह के समय दहेज, धन, आभूषण आदि के रूप में लाभ होगा। यह आपको एक आरामदायक जीवन जीने और अपने पति के साथ विलासिता का आनंद लेने में सक्षम बनाएगा।

आपकी कुंडली चोरी की किसी बड़ी घटना का संकेत नहीं देती है। जो भी चोरी या हानि हो सकती है वह संभवतः मामूली होगी और आपको इस संबंध में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि आपको अपने घर में ताला लगाने, अपनी कीमती वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रखने आदि जैसी सावधानी नहीं बरतनी चाहिए।

आपके लिए बीमा जैसे जीवन बीमा, कार बीमा आदि कराना उचित होगा। अल्पकालिक बीमा के माध्यम से लाभ की संभावना है।

कुल मिलाकर, आप अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेंगी और कोई गंभीर बीमारी नहीं होगी। हालाँकि, श्रोणि की हड्डियों, मूत्राशय के रोगों, प्रोस्टेट ग्रंथियों के बढ़ने आदि का संकेत मिलता है।

मंगल, इस भाव का स्वामी होने के नाते, यह संकेत देता है कि आप एक तेज़ वाहन चालक हैं और इसके साथ ही आप दुर्घटना संभावित भी हैं। घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन साथ ही वाहन चलाते समय सावधान रहने और रात में गाड़ी चलाने, पूरी गति से गाड़ी चलाने आदि जैसे जोखिम न लेने की सलाह दी जाती है।

यद्यपि आप एक लंबे जीवन का आनंद लेंगी, लेकिन त्वरित और अचानक मृत्यु की संभावनाएं बहुत अधिक हैं। इसमें अधिक कष्ट नहीं होगा और जो भी कष्ट होगा, वह अल्पकालिक होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म के समय, धनु राशि नौवें भाव में स्थित थी जो धर्म में रुचि का संकेत देती है। आप पूरी तरह से धार्मिक कार्यों के प्रति समर्पित हैं और प्रतिदिन धार्मिक पूजा के लिए कुछ समय समर्पित करेंगी। आपका सर्वशक्तिमान में गहरा विश्वास है और मानती हैं कि ईश्वर के आशीर्वाद के बिना व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। आप समय-समय पर धार्मिक समारोहों का आयोजन कर सकती हैं। आपको पवित्र स्थानों की यात्रा करने का भी शौक है।

आपकी सहज ज्ञान शक्ति अच्छी तरह विकसित है और आप भविष्यवाणियों में कुशल हैं। आध्यात्मिकता और गणित में आपकी रुचि आपको अपनी सहज शक्ति विकसित करने के लिए प्रेरित करेगी और आप तंत्र-मंत्र में गहरी रुचि ले सकती हैं। वास्तव में, आपकी प्रेरणा हमेशा उच्च शिक्षा के लिए होगी।

आपके जीवन के दौरान लंबी यात्राओं का भी संकेत है जिससे आपको प्रसिद्धि और पहचान मिलेगी।

जीवन के उत्तरार्ध में, आप अपने पोते-पोतियों से सुख प्राप्त करेंगी जो आपके लिए आनंद का स्रोत और गर्व का कारण होंगे। वे समृद्ध होंगे जिससे आपको बहुत संतोष मिलेगा। आपके पोते-पोती अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे और आर्थिक रूप से संपन्न होंगे।

धनु राशि के नौवें भाव में मंगल यह संकेत देता है कि आपको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बहुत अधिक खर्च करना होगा। आपका अपने जन्मस्थान से दूर के स्थानों से गहरा संबंध होगा।

आप अपने दृष्टिकोण से दृढ़ता से जुड़ी हुई हैं, और यदि चुनौती दी गई, तो आप अपनी राय के लिए बहुत संघर्ष करेंगी। आप तर्क करने में कुशल हैं और यदि उकसाया जाए, तो आपकी वाणी काफी तीखी हो जाती है। एक ओर, आप अपने विश्वासों के प्रति काफी आत्म-धर्मी और संकीर्ण रूप से कट्टर हो सकती हैं, लेकिन आप दलितों के अधिकारों की रक्षा करने में साहसी भी हो सकती हैं।

आप केवल मानसिक स्तर पर शामिल नहीं होती हैं। आप अपने विश्वासों के अनुसार कार्य करती हैं। शायद आप जो मानती हैं उसके साथ इतनी दृढ़ता से पहचान बनाती हैं कि आपको महसूस होता है कि आपके विचार वास्तव में आपका एक शारीरिक हिस्सा हैं। जाहिर है, इससे आपके लिए किसी भी मामले में किसी और की स्थिति को समझना मुश्किल हो जाता है। कोशिश करें कि आप अपने विचारों में इतनी न खो जाएं कि आप किसी और के विचारों पर विचार ही न करें।

यह स्थिति यह भी संकेत देती है कि आप काफी बेचैन हैं और जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ेगी, आप दुनिया भर में यात्रा करना और उसे देखना चाह सकती हैं।

मंगल उच्च शिक्षा में आपकी रुचि को कम कर देता है और आपको उच्च शिक्षा के प्रति उदासीन बना देता है।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

सामान्य प्रवृत्ति यह है कि मकर राशि के दसवें भाव में उदय होने पर जन्म लेने वाली कोई भी जातिका एक साथ एक से अधिक स्थानों पर काम कर रही होगी, मुख्य रूप से अधिक पैसा कमाने के लिए। लेकिन इसका एक और कारण भी हो सकता है। जो कि है: जातिका, जो हमेशा बदलाव की इच्छुक रहती है, जितनी बार संभव हो सके स्थानांतरण और स्थान बदलने की इच्छा रखेगी। इसमें, व्यक्ति को भाग्यशाली कहा जा सकता है क्योंकि चुनने के लिए व्यवसायों की एक विस्तृत श्रृंखला है।

आप कानून, शिक्षण, खेल के सामान, लोहा और इस्पात, सामान्य कारखानों, तेल, भूमि, सिंचाई और कृषि क्षेत्रों के अनुबंधों या जानवरों से जुड़े व्यवसाय का चयन कर सकती हैं। लेकिन आपको एक बात के प्रति बहुत सावधान रहना होगा और वह यह है कि आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आप आवेगी कार्यों और जल्दबाजी में किए गए निवेशों के माध्यम से वित्तीय नुकसान न उठाएं। यदि आप सुरक्षित रूप से खेलती हैं और आवश्यक होमवर्क करने के बाद अपने काम पर जाती हैं, तो आप सफल होने की आशा कर सकती हैं।

अपने सभी कार्यों में, आप अपने पिता के पदचिन्हों पर चलना पसंद करेंगी, जो एक ईमानदार और स्पष्टवादी व्यक्ति हैं और हमेशा नेक रास्ते पर चलने के लिए उत्सुक रहते हैं। बुद्धिमान, तर्कशक्ति और हाथी जैसी स्मरण शक्ति से संपन्न, उनमें दूसरों के विचारों को पढ़ने की अंतर्निहित शक्ति है। यह स्वाभाविक रूप से उन्हें अपनी चालों की चतुराई से योजना बनाने का लाभ देता है। उनके प्रशंसनीय गुणों के कारण ही वे कई करीबी और भरोसेमंद मित्रों को आकर्षित करते हैं जो जरूरत के समय उनकी सहायता करने के लिए कुछ भी बलिदान कर देंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म के समय कुंभ राशि ग्यारहवें भाव में स्थित थी। शनि इस राशि का स्वामी है। यह स्थिति आपको भाग्यशाली बनाती है। आपकी सभी मनोकामनाएं स्वाभाविक रूप से पूरी होती हैं।

इसके अतिरिक्त आपकी कई आशाएं और आकांक्षाएं हैं और सौभाग्य से आपके लिए, वे सभी सच होंगी जिससे दूसरे आपसे ईर्ष्या कर सकते हैं। आर्थिक लाभ आपको आसानी से प्राप्त होता है। आपको उन्हें खोजने की आवश्यकता नहीं है। आपके लिए लकड़ी के काम, सब्जियों और पेट्रोलियम उत्पादों का व्यापार करना फायदेमंद होगा।

आपकी जो मित्रता है, वह गहरी और लंबे समय तक चलने वाली होगी। मित्रों के एक बड़े समूह की तुलना में छोटे समूह का साथ आपको अधिक प्रसन्न करता है।

आपको बड़े लोगों, अक्सर काफी उम्रदराज लोगों के साथ जुड़ाव से लाभ होता है। आपका गंभीर दृष्टिकोण आपके लिए अपनी उम्र के लोगों की तुलना में बड़े लोगों को बेहतर समझना आसान बनाता है। जब आप बड़ी होंगी, तो आप अपने दोस्तों के लिए एक शिक्षिका के रूप में कार्य कर सकती हैं और वे आप पर भरोसा करेंगे और आपको सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

सावधानी का एक शब्द; अपने दोस्तों के चुनाव में चयनात्मक रहें, क्योंकि वे आपके जीवन को काफी हद तक प्रभावित कर सकते हैं।

जिस समाज में आप रहती हैं, वह अच्छा होगा। किसी भी स्थिति में, आप बहुत मिलनसार हैं और दोस्तों के मनोरंजन की शौकीन हैं। इससे समाज में आपका नाम अच्छा होगा और समाज के लोग आपके बारे में बहुत अच्छी बातें करेंगे और आपके खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहेंगे। उनके लिए आपके बारे में अफवाहें फैलाना या गपशप करना भी अकल्पनीय होगा। इसके विपरीत, वे आपके लिए मददगार होंगे।

संभवतः आपके भाइयों की तुलना में आपकी बहनें अधिक होंगी जो आपसे बड़ी होंगी। ये बड़ी बहनें आपके लिए आपके बड़े भाइयों की तुलना में कहीं अधिक करेंगी और परेशानी या अनिर्णय की सभी स्थितियों में, आप अपने भाइयों के बजाय अपनी बहनों की ओर रुख करेंगी। बाएं कान की समस्याओं का संकेत है लेकिन यह कुछ गंभीर नहीं होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म के समय बारहवें भाव में मीन राशि यह संकेत देती है कि विशेष रूप से आपके जीवन के शुरुआती वर्षों के दौरान, आप धन के मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगी, लेकिन अपने खुले हाथ, अपनी फिजूलखर्ची और भविष्य के लिए व्यवस्था करने में अपनी विफलता के कारण, आपको जीवन में बाद में वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप पहले से योजना बनाती हैं तो ऐसा होने की आवश्यकता नहीं है। और दोस्तों के साथ मेलजोल करते समय हर बार बिल चुकाने की अपनी आदत छोड़ दें।

आप स्वभाव से धार्मिक हैं और धार्मिक पूजा और तीर्थयात्राओं पर बहुत पैसा खर्च करेंगी। आप अपने बच्चों से बहुत प्यार करती हैं और उनकी शिक्षा पर बहुत पैसा खर्च करेंगी और उन्हें बेहतरीन स्कूलों और कॉलेजों में भेजने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगी। इस राशि के लोगों के बहुत सारे मित्र और रिश्तेदार होते हैं और वे घर पर उनका सत्कार करके खुश होते हैं और इस उद्देश्य के लिए पैसा खर्च करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।

साथ ही, आपको फर्नीचर आदि जैसे घरेलू खर्चों पर कोई भी राशि खर्च करने में कोई आपत्ति नहीं है। आप पहले खर्च करेंगी और अपना बजट बाद में देखेंगी। यह काफी संभव है कि आप अधिक खर्च कर देंगी लेकिन कर्ज बहुत अधिक नहीं होगा ताकि आप इसे बाद में कभी भी चुका सकें।

एक प्रमुख लक्षण एक निश्चित बेचैनी है, नए विचारों, नए क्षितिज, अपने परिवेश में बदलाव की निरंतर खोज है और आप बहुत यात्रा करके इस इच्छा को पूरा करती हैं।

आपकी कुंडली में विदेशी यात्राओं के संकेत हैं जो संभवतः शिक्षा के संबंध में या आधिकारिक दौरों पर हों। यह स्पष्ट है कि आपको इन यात्राओं से भौतिक और अन्य दोनों रूपों में लाभ होगा।

आपके लिए विदेश में लंबे प्रवास का संकेत है जो कि एक बहुत अच्छी बात है क्योंकि आपके पास अपनी इच्छानुसार दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने और अन्वेषण करने के लिए पर्याप्त समय होगा। इससे आपका दृष्टिकोण व्यापक होगा और आप अधिक सुसंस्कृत बनेंगी।

बारहवें भाव में मित्र राशि मीन में चंद्रमा आपको धनी और प्रसिद्ध बनाता है। आप अपना पैसा संपत्ति पर खर्च करना पसंद करती हैं। चाहे आप इसे बाद में बेचने का निर्णय लें या इसे अपने पास रखें, यह आप पर निर्भर करता है लेकिन किसी भी तरह से आपको लाभ होगा। बाद में, इस संपत्ति को लेकर विवाद हो सकते हैं लेकिन इन्हें आसानी से सुलझा लिया जाएगा और सही मालिक के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं रहेगा।

आप व्यापार पर भी पैसा खर्च करेंगी और काफी लाभ कमाते हुए बहुत अच्छा करेंगी।

विदेशी यात्राओं के संकेत हैं और यात्रा की शौकीन होने के कारण आप वहां आनंद उठाएंगी। संभवतः आप कुछ संपत्ति खरीदने के लिए विदेश जाएंगी और उस स्थान से इतनी मोहित हो सकती हैं कि अंततः वहीं बस जाएं।

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा, उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समयांतराल में कोई नया कार्य प्रारंभ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरीपेशा महिलाओं के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानांतरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिसके फलस्वरूप आप कार्य-व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान के शनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक व्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है, जिसके प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपनी संतान की शिक्षा पर धन खर्च करेंगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्यक्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-

चढ़ कर भाग लेंगी, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। आपको मित्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

सन्तान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से सन्तान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु आपको लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्ध बहुत अच्छा है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है, तो विवाह भी संपन्न हो सकता है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है, यह समय गर्भाधान के लिए बहुत श्रेष्ठ रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वादश भाव में स्थित शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकती हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की अधिक आवश्यकता है, अन्यथा आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित आहार अपनाएं व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके भीतर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होना शुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगी। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करने पड़ेंगे। छात्राओं की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी, परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातिकाओं को अभी तक नौकरी नहीं मिली है, उन्हें कुछ दिन और इंतजार करना

पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद का समय छात्राओं के लिए विशेष रूप से अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारंभ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लंबी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाली महिलाओं की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यंत्र, मंत्र और तंत्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ सकता है। घरेलू सुख, शांति एवं समृद्धि की प्राप्ति के लिए आप हवन, ग्रह शांति या अन्य कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगी।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तुओं का दान करें अथवा काली कमली (कम्बल) गरीबों को दान करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में गोचर करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवंबर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितंबर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकती हैं, जिसके कारण आपका कार्य-व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं, जिनसे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरीपेशा महिलाओं की अचानक पदोन्नति या स्थानांतरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको आय के कुछ नए स्रोत मिल सकते हैं। शेयर बाजार व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकती हैं। अपनी कार्यकुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल से आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगी, परंतु 26 नवंबर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल न होने के कारण आपके कार्यक्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समयांतराल में आपको किसी पर विश्वास किए बिना अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश भाव के शनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे, जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगी। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाएं, अन्यथा नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे ऋणों से मुक्ति मिल सकती है। घर-परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिनमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवंबर के बाद समय अधिक प्रतिकूल हो रहा है। इस समयांतराल में कोई बड़ा निवेश न करें और न ही किसी को उधार दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा और सभी लोगों के भीतर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शांति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रह सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 26 नवंबर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा; उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की कोशिश करेंगी।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति संतान की रुचि बनी रहेगी, परंतु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है, जिसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान की इच्छुक महिलाओं के लिए यह गर्भधारण का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है; वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य संतान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश भाव का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकती हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से आपके भीतर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगी। स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करती रहें। 26 नवंबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में बैठने जा रही हैं, तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, परंतु मन की

अस्थिरता सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातिकाओं को रोजगार हेतु थोड़ा और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्मस्थान की यात्रा करेंगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, साथ ही 02 जून के बाद आपकी लंबी यात्राएं भी होंगी। आप धार्मिक यात्राएं कर पुण्य अर्जित करेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख, शांति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए आप अपने घर में हवन-पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगी। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भंडारा इत्यादि भी करेंगी। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप आध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मंत्र, पाठ एवं यज्ञ-अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगी।

- प्रत्येक दिन सूर्य देव को जल अर्पित करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- गुरुवार के दिन पीली वस्तु का दान करें एवं बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।

वर्षारंभ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के प्रारंभ में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारंभ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे, फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारंभ में कार्य-व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समयांतराल में कोई नया कार्य प्रारंभ न करें। द्वादश भाव में स्थित शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठ भाव में स्थित गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समयांतराल में अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रही हैं, तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा और आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारंभ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे, परंतु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुका या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है, अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से बचत करना शुरू कर दें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्चों पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारंभ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक-दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख-शांति का वातावरण बना रहेगा। ननिहाल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाइयों का सहयोग मिलेगा। गर्भाधान के लिए यह अच्छा

समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम भाव पर शनि ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से पति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारंभ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष की शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकती हैं, परंतु 28 जुलाई के बाद पंचम भाव पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह योग्य हैं, तो उनका विवाह संपन्न हो जाएगा।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है, अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान-पान पर ध्यान दें, अन्यथा स्वास्थ्य अधिक प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारंभ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां बनी रहेंगी। यदि आप पहले से ही किसी लंबी बीमारी से ग्रसित हैं, तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक अनुकूल नहीं है। षष्ठ भाव में स्थित गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा, जिससे सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे भाव के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकती हैं। कभी-कभी बीमार न होने के बावजूद भी आप बीमारी जैसा अनुभव करेंगी। शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिए आप अन्नदान भी कर सकती हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए वर्ष का प्रारंभ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा, परंतु छात्राओं के लिए समय अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारंभ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा, परंतु 28 फरवरी के बाद पंचम भाव में स्थित गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगी परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातिकाओं को रोजगार प्राप्ति हेतु कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है।

यात्रा-तबादला

द्वादश भाव में स्थित शनि के प्रभाव से वर्षारंभ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से आपकी लंबी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बरतना बहुत आवश्यक है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंद्व के कारण वर्षारंभ में आप पूजा-पाठ एवं दान-पुण्य कम ही कर पाएंगी। 28 फरवरी के बाद पंचम भाव में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। आप मंत्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगी और गुरु द्वारा दिए गए उपदेशों का पालन करेंगी।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें या शनि मंत्र का जाप करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री होकर वे फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में लौट आएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारंभ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। पुनः मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में वापस आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ कार्य-व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आप किसी नए कार्य में अपना भाग्य आजमा सकती हैं, जिससे अचानक बहुत लाभ मिलने की संभावना है। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे, परंतु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियंत्रण पा लेंगी। मार्च से अगस्त तक समय थोड़ा प्रभावित रहेगा; उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय पुनः अनुकूल हो रहा है। व्यवसाय से जुड़ी महिलाओं के लिए आय के नए स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या प्रभावशाली लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में बहुत उन्नति करेंगी। कामकाज में आपको अपने पति का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारंभ में आपकी आर्थिक उन्नति होगी और आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगी। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधियों को दूर करने में आपका धन व्यय हो सकता है, क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें, अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें, क्योंकि उसकी वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं, अन्यथा अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। आय के सभी मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारंभ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर-परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित महिलाओं का विवाह होगा, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पति के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के प्रभाव से समाज में

आपकी पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मार्च के बाद आपके मातुल पक्ष (ननिहाल) के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगी। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट मित्रों व पति के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शांति का वातावरण बनेगा, जिसमें आपके पति की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारंभ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आप शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगी, परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी बनी रह सकती है।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखती हैं, तो गर्भाधान के लिए यह उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय थोड़ा प्रभावित रहेगा, उसके बाद स्थिति पुनः बेहतर हो जाएगी।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारंभ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी, परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है। 29 मार्च के बाद आप मौसमी बीमारियों से कुछ परेशान हो सकती हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगी। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपके खान-पान एवं दिनचर्या में भी सुधार होगा। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शांति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए वर्ष का प्रारंभ उत्तम रहेगा। आपको अचानक सफलता प्राप्त होगी। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उन्हें अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो सकता है; उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केंद्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेना चाह रही हैं, तो उसके लिए समय अनुकूल है; उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में नवमस्थ राहु के कारण लंबी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्रा के योग बनेंगे।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के प्रभाव से नौकरीपेशा महिलाओं का स्थानांतरण (तबादला) हो सकता है। यह स्थानांतरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारंभ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और अधिक प्रभावित हो सकता है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपने पति के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगी।

- बेसन के लड्डू गुरुवार के दिन भगवान विष्णु के मंदिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मंत्र का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्योदय के समय भगवान सूर्य को जल अर्पित करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तुओं का दान करें व शनि मंत्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारंभ में मेष राशि के शनि प्रथम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 23 सितंबर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितंबर से 18 नवंबर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

आजीविका के लिए वर्ष का प्रारंभ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान के शनि आपको आलसी बना सकते हैं। कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। व्यापार में हानि या किसी से धोखा मिल सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखें व सतर्क रहें और किसी पर भी बहुत अधिक विश्वास न करें। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें।

1 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों या सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। साझेदारी के लिए यह समय अनुकूल है। कानून से जुड़े लोग जैसे वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे, फिर भी बड़े अधिकारियों से निश्चित दूरी बनाए रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। धनागम में कमी व मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। लग्न स्थान के शनि शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय करा सकते हैं। अतः अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें। 17 अप्रैल के बाद आपके संचित धन में भी कमी आ सकती है। इस समयांतराल में कोई बड़ा निवेश न करें, अन्यथा आपका पैसा फंस सकता है, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु-गुरु चांडाल योग बन रहा है।

01 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने से आपके आय स्रोतों में बढ़ोतरी होगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में उन्नति व उम्मीद से अधिक लाभ की संभावनाएं बन रही हैं। आपको मित्र व पति से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर धन खर्च हो सकता है। नई संपत्ति के क्रय-विक्रय के लिए अभी समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष की शुरुआत पारिवारिक अनुकूलता के लिए शुभ नहीं रहेगी। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा। आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध खराब हो

सकते हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद परिवार में सुख-शांति का वातावरण बनेगा। पति के साथ समन्वय मधुर होगा। जनकल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगी, जिससे समाज में आपका कद और बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारंभ में संतान से संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

01 मई से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपकी संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी संतान अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेगी। वे परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगी। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय बहुत शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारंभ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होती रहेंगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आप मोटापे एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशान हो सकती हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी शुरू हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योग करें व खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारंभ करियर एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपना मनोबल बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

अप्रैल के बाद तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं के लिए समय अच्छा रहेगा। आप अपनी कार्यकुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी लंबी यात्राएं भी होंगी। आपकी सारी यात्राएं अकस्मात ही होंगी।

अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यावसायिक यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारंभ में मानसिक द्वंद्व के कारण धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगी। लग्नस्थ शनि एवं नवमस्थ राहु आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित कोई धार्मिक कार्य करना चाहती हैं तो वह भी निरस्त हो सकता है। 01 मई के बाद सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपने पति के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगी या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा-शुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

केतु

केतु की महादशा 16/06/2019 को शुरू हो रही है 15/06/2026 को समाप्त हो रही है इसकी अवधि 7 वर्ष की है। आपकी कुंडली में केतु गुरु की राशि में नौवें भाव में है। केतु इस भाव से तीसरे भाव पर दृष्टि डालता है। इससे पहले आपकी 17 वर्षों तक बुध की दशा थी। तीसरे, छठे भाव के स्वामी के रूप में बुध की दशा ने आपको छोटी यात्राएं, कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं, प्रतिद्वंद्वियों पर विजय, मातृ पक्ष के संबंधों से लाभ प्रदान किया होगा। केतु की इस दशा में आप यात्रा करेंगी, आपकी आध्यात्मिक मामलों में रुचि होगी, आपको कुछ लाभ प्राप्त होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य काफी अच्छा रहेगा। मौसमी बदलावों के कारण कुछ आमवाती समस्याएं, त्वचा रोग, फोड़े-फुंसियां, बुखार, पित्त की समस्या हो सकती है। कुछ सावधानियों के साथ इनमें से कई परेशानियों को दूर किया जा सकता है।

वित्त, व्यवसाय :

आपकी वित्तीय स्थिति अच्छी रहेगी। आपको अपने पिता से कुछ लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको संचार, जनसंपर्क, संबंधों के माध्यम से लाभ हो सकता है। आपको सट्टेबाजी से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। करियर के विकल्प, व्यावसायिक प्राथमिकताएं कानून, शिक्षण, प्रबंधन, लेखांकन, ज्योतिष, पेशेवर खेल, कंप्यूटर तकनीक, सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हो सकती हैं। चमड़ा, खेल के सामान, पशु, हथियार, दवाइयों, रत्न, कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक्स का व्यवसाय लाभदायक रहेगा। जो जातिकाएं नौकरी में हैं, उनकी अच्छी प्रतिष्ठा होगी वे जिम्मेदार पदों पर रहेंगी। आपको नाम, प्रसिद्धि, अच्छा दर्जा प्राप्त होगा। जो जातिकाएं व्यवसाय, पेशे में हैं, उनके कार्यों में लाभकारी परिवर्तन, सफलता प्राप्त होगी। आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंगी, शत्रुओं, प्रतिद्वंद्वियों पर विजय प्राप्त करेंगी। आपकी कमाई, लाभ भी अच्छे रहेंगे।

वाहन, यात्राएं, संपत्ति :

चंद्रमा की अंतर्दशा में आपको जीवन की कुछ सुख-सुविधाएं प्राप्त होंगी। आपको वाहन के साथ मामूली समस्याएं हो सकती हैं। छोटी-मोटी हानि से बचने के लिए संपत्ति के लेन-देन सावधानी से किए जाने चाहिए। आप बुध की अंतर्दशा में लाभदायक छोटी यात्राएं, गुरु की अंतर्दशा में लंबी यात्राएं करेंगी।

शिक्षा :

इस अवधि के दौरान आपकी शिक्षा अच्छी रहेगी। आप उच्च शिक्षा के लिए जा सकती हैं अपनी पसंद का संस्थान प्राप्त कर सकती हैं। तकनीकी विषय, कानून, पराभौतिक विज्ञान, सिविल इंजीनियरिंग, चिकित्सा, पेशेवर खेल, भौतिक विज्ञान जैसे विषय आपकी रुचि के हो सकते हैं। आप

सक्रिय, उद्यमशील हैं, उत्साह से भरी हुई हैं अपनी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करेंगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपके संबंध काफी अच्छे रहेंगे। आपकी संतान सुखी, समृद्ध होगी वह आपके लिए खुशी का स्रोत बनेगी। आपके पति को छोटी यात्राएं, रिश्तेदारों से मदद, धन, अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होगा। आपके अपने पति के साथ अच्छे संबंध रहेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य थोड़ा खराब हो सकता है, उन्हें धन, सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों की विदेश यात्रा होगी, उनके व्यावसायिक हितों में वृद्धि होगी, जबकि बड़े भाई-बहनों को विद्या, समृद्धि, सुख-सुविधाएं, सफलता प्राप्त होगी। केतु की दशा के दौरान आपका झुकाव आध्यात्मिक गतिविधियों की ओर रहेगा।

अंतर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अंतर्दशा में आप यात्रा करेंगी, आपको संतान सुख, नाम, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। इसके बाद आने वाला शुक्र पारिवारिक सुख, धन, विवाह दे सकता है। सूर्य की अंतर्दशा सट्टेबाजी, संतान से लाभ दे सकती है। चंद्रमा की अंतर्दशा जीवन की सुख-सुविधाएं, माता से सुख प्रदान करेगी। लग्न स्वामी मंगल की अंतर्दशा स्वास्थ्य, धन, सुख, सफलता प्रदान करेगी, जबकि राहु कुछ समस्याएं पैदा कर सकता है। गुरु की अंतर्दशा धन, समृद्धि, यात्रा प्रदान करेगी। शनि की अंतर्दशा करियर में सफलता, अच्छी कमाई दे सकती है, जबकि बुध की अंतर्दशा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं, प्रतिद्वंद्वियों पर विजय, संबंधों से लाभ दे सकती है।

शुक्र

शुक्र की महादशा 20 वर्ष की अवधि के लिए होती है। आपके मामले में यह 15/06/2026 को शुरू होती है और 15/06/2046 को समाप्त होगी।

आपकी कुंडली में शुक्र दूसरे और सातवें घर का स्वामी है, जो पांचवें घर में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, जो प्रेम संबंधों, कामुक सुखों, पारिवारिक सुख, जीवन शक्ति, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग और जीवन के सुखों का प्रतीक है। सामान्यतः शुक्र कहे जाने वाला यह ग्रह मीन राशि में उच्च का और कन्या राशि में नीच का होता है। यह वृष और तुला राशि का स्वामी है जबकि इसकी मूलत्रिकोण राशि तुला है। पांचवें भाव में स्थित होकर यह आपकी कुंडली के 11वें भाव को देख रहा है और उस पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। जिस भाव में यह स्थित है अर्थात पांचवां भाव, वह संतान, आनंद, स्राव, मनोरंजन, रोमांस, प्रेम प्रसंग, धार्मिक प्रवृत्ति, अपार धन, आध्यात्मिक साधनाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र, सूर्य की सिंह राशि में संतान के भाव यानी पांचवें घर में स्थित होकर, हालांकि इस दशा अवधि के दौरान किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना न होने का आश्वासन देता है, लेकिन सूर्य की शत्रु राशि में होने के कारण यह आपको एक या दूसरी छोटी स्वास्थ्य समस्याएं देगा जो आपको इस अवधि के दौरान परेशान कर सकती हैं। हालांकि, दूसरे (सातवें के अलावा) यानी धन भाव के स्वामी होने के नाते, आपको अपनी ऐसी सभी जरूरतों और तात्कालिकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन मिलेंगे।

संपत्ति और वित्त :

सातवें के साथ-साथ दूसरे भाव के स्वामी शुक्र के त्रिकोण में पांचवें भाव में होने से, इस दशा अवधि के दौरान आपके लिए चल और अचल संपत्ति बनाने के विभिन्न अवसर आएंगे। ऐसी संभावना है कि आप सट्टेबाजी के माध्यम से पैसा कमाएँगी, यानी लॉटरी या जुआ या शेयर बाजार में, जहाँ आप अच्छा पैसा कमाएँगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

व्यवसाय :

बुद्धिमान और विवेकी होने के कारण आप अपने वित्तीय करियर में सफल होंगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपकी कई पदोन्नतियाँ होंगी, जिससे आपकी स्थिति के साथ-साथ वित्तीय स्थिति में भी सुधार होगा। यदि आप व्यवसाय में हैं, तो आप अप्रत्याशित लाभ और मुनाफे के साथ-साथ सट्टेबाजी के माध्यम से भी लाभ कमाएँगी। आपके मन में कुछ असामान्य और नए विचार आएंगे, जिन्हें व्यवहार में लाने पर अच्छी कमाई और लाभ होगा। वित्त में वृद्धि अच्छी होगी।

पारिवारिक जीवन :

7वें भाव का स्वामी शुक्र (2रे के अलावा) घर के साथी या पति का प्रतिनिधित्व करता है, त्रिकोण में होने के कारण यह आपको एक सुखद वैवाहिक जीवन देगा जो आपको पारिवारिक जीवन के व्यवहार में पूर्ण सामंजस्य प्रदान करेगा। आपके पति के सहयोगी और मददगार होने से आपको एक सुखी पारिवारिक जीवन मिलता है। लड़कों की तुलना में अधिक कन्या संतान होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

शिक्षा :

/ शिक्षा प्राप्त करना :

शिक्षा :

की दृष्टि से यह अवधि अनुकूल है। यदि आप अपनी शैक्षणिक अवधि में हैं तो आप इसे सफलतापूर्वक पूरा करेंगी अन्यथा साहित्यिक गतिविधियों में आपकी रुचि बनी रहेगी।

दशा विश्लेषण महादशा : शुक्र
(15/06/2026 - 15/10/2029)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/06/2026 को प्रारंभ होकर 15/06/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 15/06/2026 को प्रारंभ होकर 15/10/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र विवाह, प्रेम और सुख-सुविधाओं का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। आप रोमांटिक और शायरी की शौकीन बनेंगी। मित्र खूब होंगे। दिल और दिमाग मजबूत होने से धनागम उत्तम होगा। सट्टेबाजी या शेयरों से भी धन कमा सकती हैं। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

दशा विश्लेषण महादशा : शुक्र
(15/10/2029 - 15/10/2030)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 15/06/2026 को प्रारंभ होकर 15/06/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 15/10/2029 को प्रारंभ होकर 15/10/2030 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मपत्री में सूर्य छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, अधीनस्थ कर्मचारी या सेविका, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अत्यधिक कष्ट का द्योतक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक एवं एक शक्तिशाली ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी प्रशासनिक क्षमता उत्तम होगी और हर कार्य में सफलता मिलेगी। धनार्जन भी श्रेष्ठ रहेगा।

स्वास्थ्य :

का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। छाती या हृदय की कोई समस्या हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्नलिखित उपाय आजमाएं :

1. दूध में शहद डालकर पिएं और अग्नि को दूध अर्पित करें।
2. गरीबों को आटा, गुड़ और तांबा दान करें।

3. सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करती हुई सूर्य को जल अर्पित करें।

दशा विश्लेषण महादशा : शुक्र
(15/10/2030 - 15/06/2032)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 15/06/2026 को प्रारंभ हुई थी और 15/06/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में चन्द्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 15/10/2030 से प्रारंभ होकर 15/06/2032 को समाप्त होगी।

चन्द्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुःख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुःख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

चन्द्रमा मस्तिष्क और माता का कारक है।

द्वादश भाव में स्थित होकर चन्द्रमा कुण्डली के षष्ठ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

द्वादश भाव में चन्द्र की स्थिति दुर्बल समझी जाती है क्योंकि यह भाव अशुभ माना जाता है। इस अवधि में आप रहस्य विद्या में रुचि ले सकती हैं; मस्तिष्क में विविध विचार आएंगे। संवेदनशीलता बढ़ने से कष्टों में वृद्धि हो सकती है। विवेक शक्ति कम हो सकती है; गुप्त शत्रु सबल होंगे।

अति संवेदनशीलता के कारण किसी कांड में फंस सकती हैं। अरिष्ट से बचाव के लिए ज्येष्ठ या श्रावण मास में शुक्ल पक्ष के सोमवार से प्रारंभ कर कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को उपवास करें।

योग

वाशि योग

à¤¸à¥à¤°à¥à¤¯à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤—à¤°à¤¹à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¬ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¸à¤®à¥à¤¦à¥à¤°à¤¿à¤• 1, 6à¥¤à¥¤

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤® à¤•à¥à¤£à¥¤à¤¿à¤²à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤®à¤‚à¤—à¤² à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤…à¤¸à¥à¤¤ à¤—à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤§à¤¨, à¤¸à¤®à¥ƒà¤¦à¥à¤§à¤¿ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤®à¤¾à¤œ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤¦à¤¿à¤²à¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤® à¤•à¥à¤£à¥¤à¤¿à¤²à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤…à¤¸à¥à¤¤ à¤—à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¸à¤®à¥à¤¦à¥à¤°à¤¿à¤• à¤¸à¤®à¥ƒà¤¦à¥à¤§à¤¿ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤®à¤¾à¤œ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤¦à¤¿à¤²à¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

चक्रवर्ती राजयोग

à¤à¤•à¥½à¤ªà¤¿ à¤µà¤¿à¤¶à¥‡à¤· à¤•à¥à¤·à¤£ à¤®à¥‡à¤‚ à¤œà¤¨à¥à¤® à¤²à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤¬à¤¾à¤²à¤• à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¤¾ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¬à¤²à¤µà¤¾à¤¨ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤…à¤§à¤¿à¤• à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¬ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¸à¤®à¥à¤¦à¥à¤°à¤¿à¤• 1, 6à¥¤à¥¤

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤•à¥‡à¤‚à¤¦ à¤à¤¸à¥‡ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤œà¥‹ à¤¸à¥à¤µà¤¯à¤‚ à¤•à¥‡ à¤˜à¤° à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¬à¤²à¤µà¤¾à¤¨ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤…à¤¤à¥à¤¯à¤¨à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

¥à¤£à¤¬à¤²à¥€ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤šà¤•à¥à¤°à¤µà¤°à¥à¤¤à¥€ à¤°à¤¾à¤œà¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤ªà¥à¤°à¤¾ à¤°à¤¾à¤¤à¥à¤°à¤¿ à¤ªà¤°à¥à¤¯à¤¨à¥à¤¤ à¤¬à¥à¤§ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤°à¥€ à¤¬à¤¨à¤¾à¤¤à¥‡ à¤¹à¥à¤ à¤¬à¥à¤§à¤¾à¤¦à¤¿à¤¤à¥à¤¯ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥‡ à¤¸à¤®à¤¾à¤¨ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤¯à¥‹à¤— à¤®à¤¾à¤¨à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤§à¤¨ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¬à¥à¤¦à¥à¤§à¤¿ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤«à¤²à¤¤à¤¾ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

वल्लकी वीणा योग

à¤¸à¤à¥€ à¤à¥à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¸à¤¾à¤¤ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¨à¤·à¥à¤Ÿ à¤¹à¥‹ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¸à¤à¥€ à¤—à¥à¤¹ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤‚à¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤°à¤®-à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥€ à¤¤à¤°à¤¹ à¤¹à¥€ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¸à¤¬à¤¸à¥‡ à¤¶à¥à¤ à¤¯à¥‹à¤—à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‡ à¤à¤• à¤®à¤¾à¤¨à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤•à¥‹à¤ˆ à¤—à¥à¤¹ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥‡ à¤¸à¤¾à¤¤à¤µà¥‡à¤‚ à¤¯à¤¾ à¤†à¤ à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤°à¤®-à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥€ à¤¤à¤°à¤¹ à¤¹à¥€ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¸à¤¬à¤¸à¥‡ à¤¶à¥à¤ à¤¯à¥‹à¤—à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‡ à¤à¤• à¤®à¤¾à¤¨à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : सूर्य,चन्द्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र,श

योग की संभावना : 99999 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¦à¥à¤°à¥à¤²à¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¸à¤à¥€ à¤—à¥à¤¹ (à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¶à¤¨à¤¿) à¤—à¥à¤°à¤¹à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤®à¤§à¥à¤¯ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤‚à¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤«à¤²à¤¤à¤¾ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¬à¤¡à¤¼à¤¾ à¤¨à¤¾à¤® à¤¯à¤¶ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤¯à¥‹à¤— à¤®à¤¾à¤¨à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¬à¤¡à¤¼à¤¾ à¤¨à¤¾à¤® à¤¯à¤¶ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

भूप योग

à¤¤à¤¬ à¤¬à¥€à¤¸ à¤—à¥à¤¹à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤šà¤¾à¤° à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¾à¤¤ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ

à¥¤à¥¤ à¤œà¤¾à¤¤à¤•à¤ªà¤¾à¤°à¤¿à¤œà¤¾à¤¤ à¥¤à¥¤ à¤...- 14/à¤¶à¥à¤²à¥‹à¤•

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤...à¤ªà¤¨à¥€ à¤‰à¤šà¥à¤š à¤°à¤¾à¤¶à¤¿ à¤®à¥‡à¤‚ à¤°à¤¾à¤¹à¥ à¤—à¤¤ à¤•à¥‹ à¤›à¥‹à¤¡à¤•à¤° à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‡à¤–à¤¤à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¬ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¸à¤¿à¤‚à¤¹ à¤°à¤¾à¤¶à¤¿ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¬ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¾à¤¹à¤° à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

योग कारक ग्रह : गुरु,राहु,केतु योग की संभावना : 288 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤à¤• à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¬ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¾à¤¹à¤° à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¬ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¸à¤¿à¤‚à¤¹ à¤°à¤¾à¤¶à¤¿ à¤®à¥‡à¤‚

à¥¤à¥¤ à¤¸à¤°à¥à¤µà¤¾à¤°à¥à¤¥à¤šà¤¿à¤¨à¥à¤¤à¤¾à¤®à¤£à¤¿ à¥¤à¥¤ à¤...-4/à¤¶

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤®à¥à¤²à¤¸à¤¾à¤°à¥à¤¥ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¯à¤¾ à¤šà¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤®à¤‚à¤—à¤² à¤¯à¤¾ à¤¶à¤¨à¤¿ à¤¯à¤¾ à¤°à¤¾à¤¹à¥ à¤¯à¤¾ à¤•à¥‡à¤¤à¥ à¤•à¥‡ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¬à¥ˆà¤ à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤•à¥‡à¤¸à¤°à¥€ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 12 में 1

à¤¤à¤²à¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤²à¤—à¥à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¬à¥ˆà¤ à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥‡ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¾à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤µà¥à¤¯à¤•à¥à¤¤à¤¿ à¤•à¥‹ à¤¬à¥‹à¤²à¤¨à¥‡ à¤®à¥‡à¤‚ à¤•à¤ à¤¿à¤¨à¤¾à¤ˆ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆà¥¤

कंठरोग योग

à¤à¤¾à¤³à¤¾à¤¥ à¤¸à¥ƒà¤·à¥à¤Ÿà¤¿ à¤—à¤²à¤°à¥‹à¤—à¤®à¥‚à¤²à¤• à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤®à¥à¤²à¤¸à¤¾à¤°à¥à¤¥ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¯à¤¾ à¤šà¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤®à¤‚à¤—à¤² à¤¯à¤¾ à¤¶à¤¨à¤¿ à¤¯à¤¾ à¤°à¤¾à¤¹à¥ à¤¯à¤¾ à¤•à¥‡à¤¤à¥ à¤•à¥‡ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¬à¥ˆà¤ à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤•à¤£à¥à¤ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : राहु

योग की संभावना : 3 में 1

à¤¤à¤²à¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤²à¤—à¥à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¬à¥ˆà¤ à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤•à¤£à¥à¤ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤®à¥à¤²à¤¸à¤¾à¤°à¥à¤¥ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¯à¤¾ à¤šà¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤®à¤‚à¤—à¤² à¤¯à¤¾ à¤¶à¤¨à¤¿ à¤¯à¤¾ à¤°à¤¾à¤¹à¥ à¤¯à¤¾ à¤•à¥‡à¤¤à¥ à¤•à¥‡ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¬à¥ˆà¤ à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤•à¤£à¥à¤ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

कर्णरोग योग

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¬à¤¾à¤°à¤¹à¤µà¥‡à¤‚ à¤¯à¤¾ à¤¬à¤¾à¤°à¤¹à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥‡ à¤¯à¥à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¸à¥‡ à¤¸à¤¬à¤¨à¤¾à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤µà¥à¤¯à¤•à¥à¤¤à¤¿ à¤•à¥‹ à¤¬à¥‹à¤²à¤¨à¥‡ à¤®à¥‡à¤‚ à¤•à¤ à¤¿à¤¨à¤¾à¤ˆ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆà¥¤

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¸à¥ƒà¤·à¥€à¤¯ à¤¸à¥¬à¤ª à¤¯à¤¦à¥à¤§à¤¾à¤¦à¤¿ à¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : राहु,बुध

योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¥‹ à¥‹à¤— à¤ªà¥,à¤°à¥à¤£à¤°à¥,à¤ª à¤¸à¥‡ à¤˜à¤Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤°à¤¹à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤«à¤²à¤¸à¥à¤µà¤°à¥,à¤ª à¤†à¤ªà¤•à¥‹ à¤•à¤°à¥à¤£à¤°à¥‹à¤— à¤¹à¥‹à¤—à¤¾à¥¤ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¹à¥€ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤¸à¥‡ à¤†à¤ªà¤•à¥‹ à¤¸à¤®à¤¯ à¤¸à¤®à¤¯ à¤ªà¤° à¤¸à¤²à¤¾à¤¹ à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤•à¥€ à¤†à¤µà¤¶à¥à¤¯à¤•à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

दीर्घायु भ्रातृ योग

à¥¤à¥¤ à¤à¤¾à¤°à¤¤à¥€à¤¯ à¤œà¥à¤¯à¥‹à¤¤à¤¿à¤· à¥¤à¥¤ à¤ªà¥ƒ-285à¥¤à¥¤

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¤à¥ƒà¤¤à¥€à¤¯ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¦à¤¶à¤® à¤¶à¥à¤¨à¥à¤¯ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥€à¤°à¥à¤˜à¤¾à¤¯à¥ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 3 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¥‹ à¥‹à¤— à¤ªà¥,à¤°à¥à¤£à¤°à¥,à¤ª à¤¸à¥‡ à¤˜à¤Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤«à¤²à¤¸à¥à¤µà¤°à¥,à¤ª à¤†à¤ªà¤•à¥‹ à¤…à¤¤à¥à¤¯à¤§à¤¿à¤• à¤§à¤¨ à¤¸à¤®à¥à¤ªà¤¦à¤¾ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤¾à¤™à¥à¤—à¤¾à¤¦à¤¿ à¤¸à¤à¥€ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¯à¥à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤¸à¥‡ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¸à¤®à¥à¤ªà¤¤à¥à¤¤à¤¿ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¥‹ à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¸à¤®à¥à¤ªà¤¤à¥à¤¤à¤¿ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 8 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤ªà¥‚à¤°à¥à¤£ à¤°à¥‚à¤ªà¤¸à¥‡ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤—à¥à¤°à¥ à¤¯à¤¾ à¤®à¤‚à¤—à¤² à¤¯à¤¾ à¤šà¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¤à¥€à¤¨à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤¬à¥€à¤š à¤•à¥‡à¤‚à¤¦à¥à¤° à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¸à¥€à¤®à¤¾à¤¨à¥à¤¤,à¤¨à¥à¤•à¥‡à¤‚à¤¦à¥à¤° à¤—à¥‡à¤¹ à¤¯à¤¾ à¤¦à¤¶à¤® à¤à¤¾à¤µ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¯à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‡à¤–à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤¾ à¤§à¤¨ à¤¸à¥‡ à¤¯à¥à¤•à¥à¤¤ à¤¸à¥à¤¨à¥à¤¦à¤° à¤à¤µà¤¨ à¤•à¥€ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤à¤¿ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤œà¥€à¤µà¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤•à¤ˆ à¤¬à¤¾à¤° à¤¸à¤µà¤¾à¤°à¥€ à¤•à¤°à¤¨à¥‡ à¤•à¤¾ à¤…à¤µà¤¸à¤° à¤ªà¥à¤°à¤¦à¤¾à¤¨ à¤•à¤°à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤¾ à¤§à¤¨ à¤¸à¥‡ à¤¯à¥à¤•à¥à¤¤ à¤¸à¥à¤¨à¥à¤¦à¤° à¤à¤µà¤¨ à¤•à¥€ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤à¤¿ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆ

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल,चन्द्र

योग की संभावना : 12 में 1

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤ªà¥‚à¤°à¥à¤£ à¤°à¥‚à¤ªà¤¸à¥‡ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤—à¥à¤°à¥ à¤¯à¤¾ à¤®à¤‚à¤—à¤² à¤¯à¤¾ à¤šà¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¤à¥€à¤¨à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤¬à¥€à¤š à¤•à¥‡à¤‚à¤¦à¥à¤° à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ

बहुपुत्र योग

à¤ªà¥à¤¤à¥à¤°à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤¯à¤¾ à¤ªà¤à¤‚à¤šà¤® à¤à¤¾à¤µ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¬à¥à¤§ à¤¯à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¯à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤¯à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‡à¤–à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥‹ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¸à¤¿à¤‚à¤¹ à¤¯à¤¾ à¤®à¥€à¤¨ à¤¯à¤¾ à¤•à¤°à¥à¤• à¤¯à¤¾ à¤§à¤¨à¥ à¤°à¤¾à¤¶à¤¿ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤¾ à¤§à¤¨ à¤¸à¥‡ à¤¯à¥à¤•à¥à¤¤ à¤¸à¥à¤¨à¥à¤¦à¤° à¤ªà¤¤à¥à¤¨à¥€ à¤•à¥€ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤à¤¿ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤¾ à¤§à¤¨ à¤¸à¥‡ à¤¯à¥à¤•à¥à¤¤ à¤¸à¥à¤¨à¥à¤¦à¤° à¤ªà¤¤à¥à¤¨à¥€ à¤•à¥€ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤à¤¿ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤¾ à¤§à¤¨ à¤¸à¥‡ à¤¯à¥à¤•à¥à¤¤ à¤¸à¥à¤¨à¥à¤¦à¤° à¤ªà¤¤à¥à¤¨à¥€ à¤•à¥€ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤à¤¿ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆ

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु

योग की संभावना : 4 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤ªà¥,à¤°à¤¬à¤¨à¥‡à¤£ à¤˜à¤Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤°à¤¹à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤«à¤²à¤¸à¥à¤µà¤°à¥,à¤ª à¤†à¤ªà¤•à¥‹ à¤…à¤¨à¥‡à¤• à¤ªà¥à¤°à¤•à¤¾à¤° à¤•à¥‡ à¤²à¤¾à¤ à¤ªà¥à¤°à¤¦à¤¾à¤¨ à¤•à¤°à¥‡à¤—à¤¾ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¹à¤° à¤•à¤¾à¤°à¥à¤¯ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¤«à¤²à¤¤à¤¾ à¤¦à¤¿à¤²à¤¾à¤à¤—à¤¾à¥¤

एकपुत्र योग

à¤ªà¥à¤¤à¥à¤°à¥‡à¤¶à¤¾à¤‚à¤¤à¤¾à¤¯à¥‹à¤— à¤¸à¥à¤µà¤¯à¤‚ à¤•à¥‡ à¤¦à¥à¤µà¤¾à¤°à¤¾ à¤…- 13/à¤¶à¥à¤²à¥‹- 11

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤•à¥à¤£à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚, à¤ªà¤‚à¤šà¤® à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤•à¥‹ à¤¸à¥à¤µà¤¯à¤®à¥‡à¤µ à¤œà¤¨à¥ à¤¦à¥‡à¤µà¤¤à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¦à¤¿ à¤‰à¤¸ à¤¦à¥‡à¤µà¤¤à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤µà¤¯à¤®à¥‡à¤µ à¤¯à¤¾ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¶à¤¬à¥à¤¦à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¥‹ à¤à¤¸à¤¾ à¤¬à¤¾à¤²à¤• à¤¯à¤¾ à¤¬à¤¾à¤²à¤¿à¤•à¤¾ à¤¦à¥€à¤°à¥à¤˜à¤¾à¤¯à¥ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 8 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤ªà¥,à¤°à¤¬à¤¨à¥‡à¤£ à¤˜à¤Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤°à¤¹à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤«à¤²à¤¸à¥à¤µà¤°à¥,à¤ª à¤†à¤ªà¤•à¥‹ à¤…à¤¨à¥‡à¤• à¤ªà¥à¤°à¤•à¤¾à¤° à¤•à¥‡ à¤²à¤¾à¤ à¤ªà¥à¤°à¤¦à¤¾à¤¨ à¤•à¤°à¥‡à¤—à¤¾ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¹à¤° à¤•à¤¾à¤°à¥à¤¯ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¤«à¤²à¤¤à¤¾ à¤¦à¤¿à¤²à¤¾à¤à¤—à¤¾à¥¤

विना पीडा मृत्यु योग

à¤¸à¥Œà¤®à¥à¤¯à¤¾à¤¦à¤¿ à¤¸à¥Œà¤®à¥à¤¯à¤¯à¥‹à¤—à¤¾à¤¨à¥à¤¸à¤¾à¤° à¤œà¤¨à¥à¤® à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¸à¤à¥€ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨à¥‹à¤‚ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥‹ à¤à¤¸à¤¾ à¤¬à¤¾à¤²à¤• à¤¯à¤¾ à¤¬à¤¾à¤²à¤¿à¤•à¤¾ à¤¦à¥€à¤°à¥à¤˜à¤¾à¤¯à¥ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤® à¤•à¥à¤£à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥‹ à¤¸à¤à¥€ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤ª•à¥€ à¤œà¤¨®à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤, à¤¯à¤¹ à¥‹à¤— à¤ª,à¤°à¥à¤£ à¤°à¥,à¤ª à¥‡à¤Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤«à¤²à¥‚à¤µà¤°à¥,à¤ª à¤†à¤ª•à¤¾ à¤®à¤°à¤£ à¤¬à¤¿à¤¨à¤¾ à¤•à¥à¤·à¥€à¤£ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤•à¥€ à¤¸à¤‚à¤à¤¾à¤µà¤¨à¤¾ à¤¹à¥‹à¤—à¥€à¥¤

बिना पीड़ा मृत्यु योग

à¤¸à¥Œà¤®à¥à¤¯ à¤¦à¥ƒà¤·à¥à¤Ÿà¤¿ à¤¸à¥Œà¤®à¥à¤¯ à¤®à¥à¤¨à¤¿ à¤…à¤•à¥à¤·à¥‡à¤¤à¥à¤°à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤—à¤¾ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¬à¤¸à¥‡ à¤¬à¤²à¤µà¤¾à¤¨ à¤¹à¥‹à¤—à¤¾ à¤¤à¤¬ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤”à¤° à¤µà¥à¤¯à¤•à¥à¤¤à¤¿ à¤¬à¤¿à¤¨à¤¾ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤ªà¥€à¤¡à¤¼à¤¾ à¤•à¥‡ à¤®à¥ƒà¤¤à¥à¤¯à¥ à¤•à¥‹ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : चन्द्र,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤ª•à¥€ à¤œà¤¨®à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤, à¤¯à¤¹ à¥‹à¤— à¤ª,à¤°à¥à¤£ à¤°à¥,à¤ª à¥‡à¤Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤”à¤° à¤µà¥à¤¯à¤•à¥à¤¤à¤¿ à¤¬à¤¿à¤¨à¤¾ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤ªà¥€à¤¡à¤¼à¤¾ à¤•à¥‡ à¤®à¥ƒà¤¤à¥à¤¯à¥ à¤•à¥‹ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

पुनर्जन्म योग

à¤®à¤¹à¤¾à¤•à¤¾à¤, à¤¸à¤®à¤¾à¤¨à¤¾à¤°à¥à¤¥à¤• à¤¸à¤®à¤¾à¤¨à¤¾à¤°à¥à¤¥à¤• à¤•à¤¹à¤¾ à¤—à¤¯à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤® à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¤¬à¤¸à¥‡ à¤¬à¤²à¤µà¤¾à¤¨ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤”à¤° à¤µà¥à¤¯à¤•à¥à¤¤à¤¿ à¤¬à¤¿à¤¨à¤¾ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤ªà¥€à¤¡à¤¼à¤¾ à¤•à¥‡ à¤®à¥ƒà¤¤à¥à¤¯à¥ à¤•à¥‹ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¤à¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤•à¤¿ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤¬à¥€à¤®à¤¾à¤°à¥€ à¤¯à¤¾ à¤•à¤·à¥à¤Ÿ à¤•à¥€ à¤µà¤œà¤¹ à¤¸à¥‡ à¤®à¥ƒà¤¤à¥à¤¯à¥ à¤¨à¤¹à¥€à¤‚ à¤¹à¥‹à¤—à¥€ à¤¬à¤²à¥à¤•à¤¿ à¤µà¤¹ à¤¸à¥à¤µà¤¸à¥à¤¥ à¤…à¤µà¤¸à¥à¤¥à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚ à¤…à¤ªà¤¨à¥‡ à¤¶à¤°à¥€à¤° à¤•à¤¾ à¤¤à¥à¤¯à¤¾à¤— à¤•à¤°à¥‡à¤—à¤¾à¥¤

¤®à¤°à¤£à¥‹à¤ªà¤°à¤¾à¤,à¤¤ à¤¶à¥€à¤˜à¥à¤° à¤œà¤¨à¥à¤® à¤²à¥‡à¤•à¤° à¤ªà¤¥à¥à¤µà¥€ à¤ªà¤° à¤†à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¦à¥ˆà¤µ à¤¸à¤¹à¤¾à¤¯à¤• à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤ªà¥‚à¤°à¥à¤£ à¤°à¥‚à¤ªà¤¸à¥‡ à¤˜à¤Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤°à¤¹à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤†à¤ª à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‡ à¤•à¤¿à¤¸à¥€ à¤•à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤•à¥€ à¤¸à¤‚à¤à¤¾à¤µà¤¨à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤†à¤ª à¤•à¥‡ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥ˆ à¤¤à¥‹ à¤†à¤ª à¤¸à¤®à¤¾à¤œ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤®à¥à¤®à¤¾à¤¨ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤ªà¥à¤¤ à¤•à¤° à¤¸à¤•à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

à¤¸à¤¦à¥à¤¯ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤•à¤, à¤—à¥à¤°à¥à¤ƒ à¤¸à¤®à¥à¤®à¤¾à¤¨ à¤¸à¤®à¥à¤®à¤¾à¤¨à¤¨à¥€à¤¯ à¤¸à¤¾à¤§à¥à¤¸à¤‚à¤¤à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤¸à¤®à¤¾à¤¨ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤•à¥‹à¤ˆ à¤µà¥à¤¯à¤•à¥à¤¤à¤¿ à¤•à¥‡ à¤•à¥‹à¤·à¥à¤ à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¬à¥ƒà¤¹à¤¸à¥à¤ªà¤¤à¤¿ à¤¸à¥‡ à¤•à¥‡à¤‚à¤¦à¥à¤° à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¯à¤¾ à¤¤à¥€à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤•à¥€ à¤¸à¤‚à¤à¤¾à¤µà¤¨à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤†à¤ª à¤•à¥‡ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤†à¤ª à¤®à¥ƒà¤¤à¥à¤¯à¥ à¤•à¥‡ à¤¬à¤¾à¤¦ à¤¬à¥à¤°à¤¹à¥à¤®à¤²à¥‹à¤• à¤•à¥‡ à¤¨à¤¿à¤µà¤¾à¤¸à¥€ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤® à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¬à¥ƒà¤¹à¤¸à¥à¤ªà¤¤à¤¿ à¤¸à¥‡ à¤•à¥‡à¤‚à¤¦à¥à¤° à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¯à¤¾ à¤¤à¥€à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¬à¤¨à¤¾ à¤¹à¥à¤† à¤¹à¥‹ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¾à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¸à¤®à¥à¤®à¤¿à¤²à¤¿à¤¤ à¤°à¥‚à¤ª à¤¸à¥‡ à¤•à¥‡à¤‚à¤¦à¥à¤° à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¥‹à¤£ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤šà¤¾à¤¹à¤¿à¤ à¥¤ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤•à¥‡à¤‚à¤¦à¥à¤° à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¥‹à¤£ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‡ à¤•à¥‡à¤µà¤² à¤à¤• à¤¹à¥€ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤…à¤§à¤¿à¤• à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¨à¤¹à¥€à¤‚ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤•à¤® à¤¸à¤®à¤¯ à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¹à¥€ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤•à¤® à¤²à¥‹à¤—à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤œà¥€à¤µà¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥€ à¤¦à¥‡à¤–à¤¨à¥‡ à¤•à¥‹ à¤®à¤¿à¤²à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨ à¤°à¤¹à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤…à¤¤à¥à¤¯à¤‚à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¨à¤¹à¥€à¤‚ à¤¦à¥‡à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤•à¤® à¤¸à¤®à¤¯ à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¹à¥€ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤•à¤® à¤²à¥‹à¤—à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤œà¥€à¤µà¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥€ à¤¦à¥‡à¤–à¤¨à¥‡ à¤•à¥‹ à¤®à¤¿à¤²à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

बहुस्त्री योग

à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤°à¤¾à¤¦à¤¿ à¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¥‹à¤£ à¤¸à¥‡ à¤•à¥‡à¤µà¤² à¤à¤• à¤¹à¥€ à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¨à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¤¾ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤•à¤® à¤²à¥‹à¤—à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤œà¥€à¤µà¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥€ à¤¦à¥‡à¤–à¤¨à¥‡ à¤•à¥‹ à¤®à¤¿à¤²à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤•à¤® à¤¸à¤®à¤¯ à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¹à¥€ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

à¥¤à¥¤ à¤¸à¤°à¥à¤µà¤¾à¤°à¥à¤¥à¤šà¤¿à¤¨à¥à¤¤à¤¾à¤®à¤£à¤¿ à¥¤à¥¤ à¤...-6/à¤¶

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤, à¤¸à¤ªà¥à¤¤à¤®à¥‡à¤¶ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥° à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¸à¤¿à¤‚à¤¹ à¤¯à¤¾ à¤®à¤•à¤° à¤°à¤¾à¤¶à¤¿ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 6 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤, à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¶à¥à¤— à¤ªà¥,à¤°à¥à¤£ à¤°à¥,à¤ªà¥‡à¤£ à¤˜Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤°à¤¹à¥¾ à¤¹à¥^à¥¤ à¤«à¤²à¥à¤µà¤°à¥,à¤ª à¤†à¤ªà¤•à¥¾ à¤...à¤¨à¥‡à¤• à¤¸à¥‡ à¤¸à¤®à¥à¤¬à¤¨à¥à¤§à¥‹à¤‚ à¤¹à¥‹à¤—à¤¾à¥¤ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¹à¥€ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¤à¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤•à¤¿ à¤†à¤ª à¤¹à¤®à¥‡à¤¶à¤¾ à¤¸à¤¤à¥à¤¯ à¤•à¤¾ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¦à¥‡à¤‚à¤—à¥‡ à¥¤

स्त्री मृत्यु या अपुत्र योग

à¤¦à¥à¤°à¥‡à¤¶à¥à¤µà¤°à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤°à¤¾à¤¶à¤¿ à¤•à¥‡ à¤¸à¥à¤µà¤¾à¤®à¥€ à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¯à¤¾ à¤¬à¤¾à¤°à¤¹à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤¤à¥‹ à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤•à¤¾à¤²à¤¸à¤°à¥à¤ª à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤, à¤¯à¤¦à¤¿ à¤¶à¥à¤— à¤ªà¥,à¤°à¥à¤£ à¤°à¥,à¤ªà¥‡à¤£ à¤˜Ÿà¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤°à¤¹à¥¾ à¤¹à¥^à¥¤ à¤«à¤²à¥à¤µà¤°à¥,à¤ª à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤•à¥à¤£à¥à¤¡à¤²à¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹ à¤•à¥ˆ à¤¸à¤•à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤•à¤¿ à¤†à¤ª à¤¸à¤®à¥à¤¬à¤¨à¥à¤§à¥€ à¤¯à¤¾ à¤¤à¥‹ à¤¸à¤¾à¤¥à¥€ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤° à¤°à¤¹à¥‡à¤‚à¤—à¥‡ à¤¯à¤¾ à¤¤à¥‹ à¤¸à¤®à¤¾à¤œ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤° à¤°à¤¹à¥‡à¤‚à¤—à¥‡ à¥¤

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

à¤¨ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤°à¤—à¤¤ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¨ à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥‹à¤¨à¥‡ à¤•à¥‡ à¤•à¤¾à¤°à¤£ à¤¨à¤¿à¤°à¥à¤¬à¤²à¤¤à¤¾ à¤¦à¥‹à¤· à¤•à¤¾ à¤¨à¤¿à¤°à¥à¤®à¤¾à¤£ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¹à¥€ à¤¸à¤¾à¤¥ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¤à¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤•à¤¿ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¾à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¤¾ à¤µà¥à¤¯à¤•à¥à¤¤à¤¿ à¤¦à¥€à¤°à¥à¤˜à¤¾à¤¯à¥ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

¤¨ à¤š à¤•à¥€à¤°à¥à¤¤à¥à¤¯à¤¨à¥à¤¤à¥à¤¥à¥¥
à¥¥ à¤¸à¤¾à¤°à¤¾à¤µà¤²à¥€ à¥¥ à¤...-10/à¤¶à¤²à¥‹-97à¥¥

à¤¯à¤¦à¤¿ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤¾à¤¨à¥à¤¯à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤¤à¤¥à¤¾ à¤•à¥‹à¤£ à¤¯à¤¾ à¤...à¤·à¥à¤Ÿà¤® à¤à¤¾à¤µ à¤®à¥‡à¤‚, à¤ªà¤¾à¤ª à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¨ à¤¹à¥‹à¤‚, à¤¤à¥‹ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥€ à¤¦à¥‡à¤¶à¤¾à¤¨à¥à¤¤à¤° à¤¯à¤¾à¤¤à¤¨à¤¾ à¤¹à¥‹à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆà¥¤

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤œà¤¨à¥à¤®à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤ªà¤¾à¤¯à¤¾ à¤œà¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤•à¤¿ à¤œà¤¬ à¤•à¥‹à¤ˆ à¤—à¥à¤°à¥ à¤¯à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤•à¤¹à¥€ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤° à¤®à¥‡à¤‚ à¤•à¥‹à¤ˆ à¤—à¥à¤°à¥ à¤¯à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¨ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥‹ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤

गजकेसरी योग

**à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤°à¤¾à¤§à¤¿à¤ªà¤¤à¤¿ à¤¦à¥‡à¤¶à¤®à¤¾à¤¨ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¶à¥à¤•à¥à¤°à¤¹ à¤¶à¥à¤ƒà¤ƒ à¤¶à¥à¤•à¥à¤°à¤¹ à¤¶à¥à¤•à¥à¤°à¤¹ à¤¶à¥à¤•à¥à¤°à¤¹

काहल योग- प्रथम विधि

à¤…à¤¨à¥‹à¤¨à¥à¤¨à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤°à¤—à¥ƒà¤¹à¤— à¤—à¥à¤°à¥à¤¨à¤¾
à¤²à¤—à¥à¤¨à¤§à¤¿à¤ªà¥‡ à¤¬à¤²à¤¾à¤¢à¥à¤¯à¥‡ à¤¬à¤¦à¥à¤§à¤¿ à¤•à¤¾à¤°à¤•à¥ à¤
à¥¤à¥¤ à¤¬à¥ƒ- à¤ªà¤¾- à¤¦à¥‹à¤°à¤¾- -à¤¯à¥‹à¤—à¤¾à¤§à¥à¤¯à¤¯à¤¨- à¤¶à¥à¤

à¤œà¤¿à¤¸ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥€ à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚ à¤—à¥à¤°à¥ à¤šà¤¤à¥à¤°à¥à¤¥à¤¶ à¤¯à¤¾ à¤¦à¤¶à¤® à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¸à¤¾à¤¤à¤µà¥‡à¤‚ à¤¯à¤¾ à¤¦à¤¸à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¥‹ à¤•à¤¾à¤¹à¤² à¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¤¾ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¥¤

योग कारक ग्रह : चन्द्र,गुरु,मंगल　　योग की संभावना : 48 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤•à¥‡ à¤…à¤¨à¥à¤¸à¤¾à¤° à¤•à¥‡à¤¨à¥à¤¦à¥à¤°à¤—à¥ƒà¤¹à¤— à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¤¾à¤°à¤• à¤—à¥à¤°à¥ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤®à¤‚à¤—à¤² à¤¹à¥ˆà¤‚, à¤œà¥‹ à¤•à¤¿ à¤†à¤ªà¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚, à¤®à¥‡à¤·, à¤¸à¤¿à¤‚à¤¹ à¤”à¤° à¤§à¤¨à¥ à¤°à¤¾à¤¶à¤¿ à¤•à¥‡ à¤œà¤¾à¤¤à¤•à¥‹à¤‚ à¤•à¥‹ à¤•à¤¾à¤°à¥à¤¯à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¤«à¤²à¤¤à¤¾ à¤®à¤¿à¤²à¤¤à¥€ à¤¹à¥ˆ à¥¤

पारिजात योग

**à¤¸à¤¾à¤®à¤¾à¤¨à¥à¤¯à¤¤à¤¯à¤¾ à¤¸à¤à¥€ à¤²à¤—à¥à¤¨à¥‹à¤‚ à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¶à¥à¤ à¤«à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¤¾ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¤¾à¤¹à¤² à¤¯à¥‹à¤— à¤¹à¥ˆ à¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¨à¤µà¤® à¤à¤¾à¤µ à¤•à¥‡ à¤¸à¥à¤µà¤¾à¤®à¥€ à¤¯à¤¾ à¤¦à¤¶à¤® à¤à¤¾à¤µ à¤•à¥‡ à¤¸à¥à¤µà¤¾à¤®à¥€ à¤®à¤¿à¤¤à¥à¤° à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¯à¤¾ à¤¸à¥à¤µà¤¯à¤‚ à¤¯à¥‡ à¤¦à¥‹à¤¨à¥‹à¤‚ à¤à¤¾à¤µ à¤¬à¤²à¤µà¤¾à¤¨ à¤¹à¥‹à¤‚ à¥¤

à¤œà¤¿à¤¸ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥€ "à¤ªà¤¾à¤°à¤¿à¤œà¤¾à¤¤" à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤‰à¤¸à¤•à¥‡ à¤¦à¤¶à¤® à¤à¤¾à¤µ à¤•à¤¾ à¤¸à¥à¤µà¤¾à¤®à¥€ à¤¯à¤¾ à¤‰à¤¸à¤•à¤¾ à¤®à¤¿à¤¤à¥à¤° à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¬à¤²à¤µà¤¾à¤¨ à¤¹à¥‹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¨à¤µà¤® à¤à¤¾à¤µ à¤•à¥‡ à¤¸à¥à¤µà¤¾à¤®à¥€ à¤¯à¤¾ à¤‰à¤¸à¤•à¤¾ à¤®à¤¿à¤¤à¥à¤° à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¬à¤²à¤µà¤¾à¤¨ à¤¹à¥‹à¤‚ à¤¤à¥‹ à¤‰à¤¸ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥‹ à¤ªà¤¾à¤°à¤¿à¤œà¤¾à¤¤ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¤¾ à¤¸à¥à¤–

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,राहु　　योग की संभावना : 2 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤‚ à¤—à¥à¤°à¥ "à¤ªà¤¾à¤°à¤¿à¤œà¤¾à¤¤" à¤µà¤°à¥à¤— à¤®à¥‡à¤‚, à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤¦à¥à¤¸à¤°à¥‡ à¤¨à¤µà¤® à¤à¤¾à¤µ à¤•à¥‡ à¤¸à¥à¤µà¤¾à¤®à¥€ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¹à¥ˆà¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¸à¤¾à¤¤à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥ˆà¥¤

उत्तमवर्ग योग

à¤¨à¥€à¤°à¥‹à¤—à¤¾à¤®à¤¯à¥à¤¤à¤®à¤µà¤°à¥à¤—à¤¯à¥‹à¤—à¤ƒ
à¥¤à¥¤ à¤¬à¥ƒ. à¤³à¤¾. à¤¹à¥‹à¤°à¤¾. à¤¯à¥‹à¤—à¤§à¥à¤¯à¤¯à¥‹ à¤¶à¥à¤²à¥

à¤œà¤¿à¤¸ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¥€ à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤•à¥‡ "à¤‰à¤¤à¥à¤¤à¤®à¤µà¤°à¥à¤—" à¤à¤¾à¤— à¤®à¥‡à¤, à¤—à¥à¤°à¤¹ à¤¹à¥‹ à¤µà¤¹ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤£à¥€ à¤¸à¥à¤€ à¤ªà¥à¤°à¤•à¤¾à¤° à¤¸à¥‡ à¤¨à¤¿à¤°à¥€à¤•à¥à¤· à¤°à¤¹à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि

योग की संभावना : 3 में 1

à¤†à¤ªà¤•à¥€ à¤ªà¤¤à¥à¤°à¤¿à¤•à¤¾ à¤®à¥‡à¤, à¤—à¥à¤°à¤¹ "à¤‰à¤¤à¥à¤¤à¤®à¤µà¤°à¥à¤—" à¤®à¥‡à¤, à¤¸à¥à¤¥à¤¿à¤¤ à¤¹à¥ˆ à¤«à¤²à¤¦à¥€à¤ªà¤•à¤¤à¤¾ à¤¸à¥‡ à¤¨à¤¿à¤°à¥€à¤•à¥à¤·à¤•à¥‹à¤‚ à¤¦à¥‡à¤–à¤¾ à¤—à¤¯à¤¾ à¤¹à¥ˆ

केमद्रुम योग

**à¤šà¥‡à¤¦à¤¯à¤¿à¤¤à¤¾à¤¯à¤¤à¤¨à¥à¤¯à¤¤à¤¾à¤—à¤¾ à¤à¤¾à¤¤à¤µà¤¾à¤¯à¤¤à¤¾à¤¨à¥à¤¯à¤¤à¤¾à¤¨à¥à¤¯à¤¤à¤¾à¤¨à¥

वाशि योग

**à¤µà¥à¤¯à¤–à¥‡à¤°à¤¿à¤¤ à¤¸à¤µà¤¾à¤¶à¤¿à¤¤ à¤¸à¤¦à¥à¤¶à¤¾à¤®à¥‡à¤‚ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¨à¤¾ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¤¹à¤²à¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤

à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¤¾à¤°à¤• à¤—à¥à¤°à¤¹ : à¤¶à¥à¤•à¥à¤°,à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥€ à¤¸à¤‚à¤à¤¾à¤µà¤¨à¤¾ : 3 à¤®à¥‡à¤‚ 1

à¤†à¤¤à¤•à¥€ à¤¤à¤¬à¤¾à¤¹à¥€ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¤à¤¬ à¤¤à¤•à¥€à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤¸à¤¾à¤®à¤¾à¤¨ à¤•à¥‹ à¤¸à¤®à¥‡à¤Ÿà¤¨à¥‡ à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤¾ à¤¸à¤®à¤¯ à¤¨à¤¹à¥€à¤‚ à¤®à¤¿à¤²à¤¤à¤¾, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤

वेशि योग

**à¤¸à¤¦à¥à¤¶à¤®à¥‡à¤‚ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¦à¥‚à¤¸à¤°à¥‡ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¨à¤¾ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¤¹à¤²à¤¾à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¾à¤°à¤¹à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¾à¤°à¤¹à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤

à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¤¾à¤°à¤• à¤—à¥à¤°à¤¹ : à¤¬à¥à¤§,à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¯à¥‹à¤— à¤•à¥€ à¤¸à¤‚à¤à¤¾à¤µà¤¨à¤¾ : 3 à¤®à¥‡à¤‚ 1

à¤†à¤¤à¤•à¥€ à¤¤à¤¬à¤¾à¤¹à¥€ à¤®à¥‡à¤‚, à¤¤à¤¬ à¤¤à¤•à¥€à¤² à¤¦à¥‡à¤¨à¥‡ à¤µà¤¾à¤²à¥‡ à¤¸à¤¾à¤®à¤¾à¤¨ à¤•à¥‹ à¤¸à¤®à¥‡à¤Ÿà¤¨à¥‡ à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤¬à¤¹à¥à¤¤ à¤¸à¤¾ à¤¸à¤®à¤¯ à¤¨à¤¹à¥€à¤‚ à¤®à¤¿à¤²à¤¤à¤¾, à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆà¥¤ à¤¯à¤¹ à¤¯à¥‹à¤— à¤¤à¤¬ à¤¬à¤¨à¤¤à¤¾ à¤¹à¥ˆ à¤œà¤¬ à¤¶à¥à¤•à¥à¤° à¤¯à¤¾ à¤¬à¥à¤§ à¤¸à¥‚à¤°à¥à¤¯ à¤¸à¥‡ à¤¬à¤¾à¤°à¤¹à¤µà¥‡à¤‚ à¤¸à¥à¤¥à¤¾à¤¨ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¹à¥‹à¤¤à¥‡ à¤¹à¥ˆà¤‚à¥¤